वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ – 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

मार्च 16–31, 2025

गुड़ी पड़वा

नवसंवत्सर-नववर्ष-वर्ष प्रतिपदा

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

प्रयागराज में विहिप–गोरक्षा विभाग द्वारा आयोजित
गोरक्षा सम्मेलन में उपस्थित पदाधिकारी तथा देशभर से पधारे गोरक्षा विभाग के कार्यकर्ता

मध्यभारत प्रांत भोपाल द्वारा संचालित 70 संस्कारशालाओं की आचार्याओं तथा प्रांत के पदाधिकारियों के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराडे

भोपाल में पत्रकारवार्ता को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराडे।

विहिप के केन्द्रीय उपाध्यक्ष व श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के सदस्य स्वर्गीय श्री कामेश्वर चौपाल जी की श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते विहिप प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति के सदस्य श्री जीवेश्वर जी मिश्र

मुंबई (महा.) में विहिप सेवा विभाग के न्यासियों की बैठक को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराडे

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

जिस परमात्मा ने द्युलोक को तेजस्वी बनाया, जिसने सुख और आनन्द की प्राप्ति के लिए पृथ्वी को दृढ़ बनाया और आदित्य मण्डल एवं स्वर्गलोक को स्थिर किया; जिसने आकाश में नाना लोकों का निर्माण किया, उस आनन्दस्वरूप परमात्मा की भक्तिपूर्वक अर्चना करते हैं। उसके अतिरिक्त और किसकी अर्चना की जाए?

– यजुर्वेद

16–31 मार्च, 2025

चैत्र कृष्ण- शुक्ल पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. – 2081–82, युगाब्द– 5126–27

सम्पादक

विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक

मुरारी शरण शुक्ल

मो. – 7217685539

परामर्शदाता

सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक

श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. – 09582555152

सज्जा

श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :

'हिन्दू विश्व'

संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6

रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली–110022–05

दूरभाष : 09582555152

011–26178992, 011–26103495

hinduvishwa@gmail.com

– : मूल्य :–

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

छियासठ करोड़ लोगों ने महाकुंभ में क्यों लगाई डुबकी?	05
महाकुम्भ की ऐतिहासिक सफलता पर अनर्गल प्रलाप क्यों?	07
भारतीय ज्ञान परम्परा क्यों आवश्यक है?	09
विनाशकाले विपरीत बुद्धि	11
त्रिवेणी स्नान आस्था के साथ–साथ वैज्ञानिक महत्व भी रखता है यही सनातन है	12
महावीर की अमृतवाणी को जन–जन तक पहुंचाना जरूरी : साध्वी सुब्रतांजी	15
अखिलेश पर भारी पड़ रहा है महाकुंभ का विरोध	16
प्रयागराज देश का पहला नगर, जहाँ बने 13 कारीडोर	17
अधारणीय वेगों को रोकने से रोग उत्पन्न होते हैं	19
गोरक्षा सम्मेलन में पारित प्रस्ताव	20
'स्वर्गीय श्री कामेश्वर चौपाल जी को दी गई भावपूर्ण श्रद्धांजलि'	22
समान नागरिक संहिता से समाज में सौहार्द्र बढ़ेगा : अजय कुमार	23
वरिष्ठ नागरिक मंत्री ने रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर का दौरा किया	24
समरसता रुद्राभिषेक में 63 जोड़ों ने सहभागिता की	25
हिंदू हेरिटेज सेंटर में भारतीय समुदाय भव्य महाशिवरात्रि उत्सव के लिए एकजुट हुआ	26

सुभाषित

विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च।।

यात्रा में ज्ञान सच्चा मित्र, घर में पत्नी सच्ची मित्र, रोग में औषधि तथा मृत्यु के समय धर्म मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र होता है।

औरंगज़ेब जैसे दुर्दांत शासक का महिमामंडन क्यों?

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

इतिहास केवल बीते समय की घटनाओं का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह एक समाज की स्मृति है, जो उसकी सांस्कृतिक पहचान, मूल्यों और भविष्य की दिशा तय करती है। भारत का इतिहास अनेक वीरों, संतों और मनीषियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने इस भूमि की रक्षा और उत्थान के लिए संघर्ष किया। लेकिन इसके साथ ही कुछ ऐसे बाहर से आए क्रूर शासक भी हुए, जिन्होंने सत्ता के लोभ में अत्याचार, विध्वंस और धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा दिया। औरंगज़ेब उनमें सबसे अधिक निंदनीय था।

आज दुर्भाग्यवश, एक सोची–समझी रणनीति के तहत औरंगज़ेब के शासनकाल का महिमामंडन किया जा रहा है। कुछ इतिहासकार, लेखक और राजनीतिक विचारधाराओं से प्रेरित समूह, इस क्रूर शासक को "सक्षम प्रशासक" और "धर्मनिरपेक्ष शासक" के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। यह न केवल ऐतिहासिक तथ्यों के साथ अन्याय है, बल्कि उन लाखों लोगों की पीड़ा और बलिदान का भी अपमान है, जिन्होंने औरंगज़ेब की बर्बर नीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया।

औरंगज़ेब का पूरा शासनकाल अत्याचार, षड्यंत्र और धर्मांधता का प्रतीक था। सत्ता के लोभ में औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर दिया और अपने भाइयों–दारा शिकोह, शुजा और मुराद की निर्मम हत्या करवाई। उसने भारत की सांस्कृतिक धरोहर को नष्ट करने के लिए काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवदेव मंदिर, सोमनाथ मंदिर और अनगिनत अन्य मंदिरों को ध्वस्त करवाया। हिंदुओं पर जज़िया कर लगाया और जबरन धर्मांतरण को बढ़ावा दिया। सिखों के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी को निर्दयता से बलिदान करवाया, क्योंकि उन्होंने कश्मीरी हिंदुओं के जबरन इस्लामीकरण का विरोध किया। छत्रपति शिवाजी महाराज को अपमानित करने का प्रयास किया, लेकिन शिवाजी के पराक्रम और रणनीति के आगे उसे हार माननी पड़ी। वीर दुर्गादास राठौड़ जैसे राजपूत योद्धाओं और सिख गुरु परंपरा के खिलाफ भी उसने क्रूर नीतियाँ अपनाईं। भारतीय कला और संस्कृति पर हमला – जहाँ शाहजहाँ के शासन में कला और स्थापत्य का विकास हुआ, वहीं औरंगज़ेब ने संगीत, चित्रकला और स्थापत्य पर रोक लगाया। इतिहास का विकृतिकरण और सत्य को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत करना कोई नई प्रवृत्ति नहीं है। विशेष रूप से कुछ विचारधाराएँ इसे एक साधन के रूप में प्रयोग कर रही हैं। कुछ राजनीतिक दल मुसलमानों को संतुष्ट करने के लिए औरंगज़ेब को "महान शासक" के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वामपंथी और औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रसित इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत किया, जिसमें मुगलों का महिमामंडन और औरंगज़ेब के अत्याचारों पर पर्दा डालना शामिल था।

भारत की सनातन परंपराओं और गौरवशाली इतिहास को कमजोर करने के लिए ऐसे मिथ्या नैरेटिव गढ़े जाते हैं, ताकि नई पीढ़ी अपने वास्तविक अतीत से कट जाए। इतिहास का उद्देश्य केवल अतीत को याद रखना नहीं, बल्कि उससे सीख लेना भी है। अगर हम अपने अतीत को विकृत रूप में देखेंगे, तो न तो हम अपने संघर्षों का सम्मान कर पाएंगे और न ही भविष्य के लिए सही मार्गदर्शन प्राप्त कर सकेंगे। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में सही इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए, जिसमें औरंगज़ेब के वास्तविक चरित्र को प्रमाणों सहित प्रस्तुत किया जाए।

जिन मंदिरों को औरंगज़ेब ने तोड़ा, उन्हें फिर से स्थापित करने की दिशा में कार्य होना चाहिए। वीरों और शहीदों का सम्मान – गुरु तेग बहादुर, शिवाजी महाराज, वीर दुर्गादास राठौड़ और सिख, मराठा, राजपूत योद्धाओं जैसे नायकों के बलिदानों का समाज में सम्मान है, पर उन्हें पाठ्यपुस्तकों में भी सम्मान जनक स्थान मिलना चाहिए।

औरंगज़ेब का पूरा शासनकाल अत्याचार, षड्यंत्र और धर्मांधता का प्रतीक था। सत्ता के लोभ में औरंगज़ेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर दिया और अपने भाइयों–दारा शिकोह, शुजा और मुराद की निर्मम हत्या करवाई। उसने भारत की साँसकृतिक धरोहर को नष्ट करने के लिए काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवदेव मंदिर, सोमनाथ मंदिर और अनगिनत अन्य मंदिरों को ध्वस्त करवाया। हिंदुओं पर जज़िया कर लगाया और जबरन धर्मांतरण को बढ़ावा दिया।

प्रो. महेश चंद गुप्ता

छियासठ करोड़ लोगों ने महाकुंभ में क्यों लगाई डुबकी ?

प्रयागराज में महाकुंभ में स्नान करके घर लौटा हूँ। मैंने माघ पूर्णिमा के दिन महासंगम में डुबकी लगाई। जब मैं डुबकी लगा रहा था, तो मेरे आस–पास हजारों, लाखों नहीं, बल्कि करोड़ों लोग स्नान कर अपने को पुण्यभागी मान रहे थे। अब तक कुल मिलाकर लगभग छियासठ करोड़ लोग महाकुंभ स्नान कर चुके हैं। प्रयागराज में उमड़े जन समुद्र को देख चुकने के बाद राजधानी दिल्ली की भागमभाग महसूस ही नहीं हो रही है। प्रयागराज की भीड़ से दिल्ली की तुलना कर रहा हूँ, तो ऐसा लग रहा है, जैसे मैं दिल्ली में नहीं, किसी छोटे शहर में पहुँच गया हूँ। दो दिन तक प्रयागराज प्रवास और फिर लौटते हुए यही प्रश्न मन–मस्तिष्क में कौंध रहा है कि देश की आधी आबादी महाकुंभ में क्यों पहुँच गई है? आखिर छियासठ करोड़ लोगों ने कुंभ में डुबकी क्यों लगाई है ?

अपने आपसे यह प्रश्न पूछ रहा हूँ और इसका उत्तर प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूं। जीवन के सत्तर वर्षों में आज तक बहुत कम ऐसे प्रश्न खड़े हुए हैं, जिनका समुचित उत्तर पाने के लिए इतना सोचना पड़ रहा हो। कई बार अर्द्ध कुंभ एवं कुंभ दर्शन किए हैं, पर 144 साल बाद आया महाकुंभ तो आश्चर्य में डाल रहा है। सोच रहा हूँ कि क्या महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन है ? अपने ही अन्तर्मन से जवाब मिलता है–नहीं...नहीं... यह तो सनातन सँस्कृति की अक्षुण्ण धारा, आस्था की शक्ति और मोक्ष की ओर बढ़ने का अद्भुत साधन है। यह हमारी उन परंपराओं का प्रतीक और प्रमाण है, जो सदियों की गुलामी और समय के थपेड़ों के बावजूद आज भी जीवित है। संसार में कई सभ्यताएँ मिट गईं, लेकिन भारतीय सँस्कृति का अस्तित्व अपनी मूल आत्मा के साथ आज भी विद्यमान है। यह महाकुंभ न केवल धार्मिक जागरूकता का प्रतीक है, बल्कि भारतीय समाज की एकता, समरसता और आध्यात्मिक शक्ति का जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

मैंने प्रयागराज में विभिन्न साधु–संन्यासियों के दर्शन किए, उनके प्रवचन सुने, सहयात्रियों से बात की। संगम पर विभिन्न प्रांतों से पधारे देशवासियों से चर्चा की। निष्कर्ष यह निकला कि उनके लिए महाकुंभ में स्नान केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और मोक्ष की यात्रा का एक महत्वपूर्ण चरण भी है। मेरे आसपास जैसे ही श्रद्धालुओं ने गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के महासंगम में डुबकी लगाई, उनके चेहरे के भावों से ऐसा लगा–जैसे उन्हें जीवन का सर्वोच्च आनंद प्राप्त हो गया हो। मैंने केरल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, पंजाब, तेलंगाना, गुजरात और तमाम राज्यों से आए श्रद्धालुओं को अपनी समस्याएँ और जीवन की परेशानियाँ भूलकर एक नई ऊर्जा से भरते हुए देखा। मैंने उन्हें देख यह अनुभव किया कि यही सनातन धर्म की शक्ति है, जहाँ आस्था और विश्वास से हर कठिनाई छोटी लगने लगती है।

क्या महाकुंभ केवल एक उत्सव है, एलआईसी के स्वागत केन्द्र में बैठे कुछ श्रद्धालुओं से पूछा, तो वो बोले–महाकुंभ हमें आत्मचिंतन और आत्मबोध की प्रेरणा भी देता है। हम इसे मात्र तीर्थयात्रा नहीं मानते, बल्कि इसे जीवन को बदलने वाली आध्यात्मिक यात्रा के रूप में अनुभव करते हैं। मुझे प्रयागराज में ऐसे संतों के दर्शन हुए, जिन्हें कुछ भी नहीं चाहिए था और ऐसे सांसारिक लोग भी मिले, जिन्हें बहुत कुछ पाने की चाह थी। कई लोग जीवन की आपाधापी से परेशान होकर मानसिक शांति की तलाश में आए थे, तो कुछ लोग यात्रा के तमाम कष्ट उठा कर केवल इस दिव्य तीर्थ अनुभव का हिस्सा बनने के लिए पहुँचे हैं।

हर तरफ अपार जन ज्वार देखकर

एक बात समझ में आई कि महाकुंभ भारतीय सँस्कृति की जीवंतता, इसकी गहराई और व्यापकता का सबसे बड़ा प्रमाण है। महाकुंभ प्रेम, अपनत्व और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को साकार करता है। प्रयागराज में हर कोई जाति, धर्म, वर्ग और सामाजिक स्थिति से ऊपर उठकर केवल श्रद्धालु बनकर ही आया है। महाकुंभ पर्व ने बता दिया है कि भारतीय सँस्कृति की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं, जो हर परीक्षा में सफलतापूर्वक खड़ी रहती है।

महाकुंभ राष्ट्र की मजबूती का प्रतीक बनकर भी उभरा है। इसमें समाज के हर वर्ग के लोग शामिल हुए हैं। एक आम श्रद्धालु से लेकर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति तक। महाकुंभ में न जाति का भेद दिखता है, न ऊँच–नीच का अंतर। हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म, समाज या वर्ग से हो, समान भाव से महासंगम में स्नान कर रहा है। इस प्रकार महाकुंभ ने हमारे समाज की एकता और भाईचारे का सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसमें देश के व्यावसायियों, उद्योगपतियों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने केन्द्र व राज्य सरकार, संतों और अखाड़ों के साथ कदम से कदम मिलाकर सुविधाओं का विस्तार करके नए आयाम स्थापित किए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार इस महा आयोजन से रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं और लगभग तीन लाख करोड़ का राजस्व उत्पन्न होने का अनुमान है। बड़े–बड़े उद्योगपतियों ने अपनी श्रद्धा से करोड़ों रुपये खर्च कर भंडारे और सेवा शिविर लगाये हैं, जिससे लाखों लोगों को भोजन और आवश्यक सुविधाएँ मिली हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में दान और सेवा की परंपरा कितनी गहरी है ?

महाकुंभ के प्रारम्भ के बाद से प्रयागराज में निरंतर आवागमन चल रहा है, लेकिन लाखों श्रद्धालु केवल स्नान करके वापस नहीं लौटे, बल्कि उन्होंने कल्पवास को अपनाया। यानी उन्होंने एक निश्चित अवधि तक प्रयागराज में रहकर आत्मचिंतन, साधना और ज्ञान मंथन किया। धन्य हैं वह कल्पवासी, जिन्होंने सत्य संकल्प लेकर समाज में वापस जाने से पहले अपने भीतर के परिवर्तन को आत्मसात किया है। मुझे ऐसे भी श्रद्धालु मिले, जिन्होंने यज्ञ, दान, जप और कीर्तन में मग्न होकर अपनी सांसारिक पहचान को भुला देने की इच्छा से स्वयं को महाकुंभ का हिस्सा बनाया।

एक संत ने महाकुंभ की व्याख्या करते हुए सत्य ही कहा कि यह योग यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, जप यज्ञ और भक्ति यज्ञ का अनुपम समागम है। यह पर्व न केवल व्यक्तिगत आत्मशुद्धि का अवसर है, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए शांति, प्रेम और सेवा का संदेश भी देने आया है।

करोड़ों लोगों के आगमन के पश्चात भी महाकुंभ एक व्यवस्थित आयोजन रहा है, जहाँ न गंदगी दिखी और न कूड़े–करकट के ढेर। महाकुंभ में पर्यावरणीय दृष्टि से जागरूक माहौल बनाने की पहल निश्चय ही सराहनीय है। विभिन्न अभियानों के माध्यम से लोगों को स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित करना अनूठा प्रयास है। प्लास्टिक का कम उपयोग, जैविक अपशिष्ट प्रबंधन और गंगा की सफाई के प्रयासों ने महाकुंभ को और अधिक सकारात्मक बनाया है। इस महान आयोजन में आधुनिक तकनीक, डिजिटल और एआई के प्रथम बार उपयोग से समूची व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से करना संभव हो सका है। इससे पूरे विश्व में हमारे देश की क्षमताओं का लोहा लोग मानने लगे हैं।

वहाँ पर हो रहे सामूहिक जप, तप, अनुष्ठान, यज्ञ, सत्संग से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा संपूर्ण ब्राह्मांड में फैलेगी और चराचर जीव के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगी। युगों–युगों से चली आ रही हमारी 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना को भी फलीभूत करेगी। माघी पूर्णिमा के दिन महाकुंभ का एक अद्भुत दृश्य मैंने साक्षात देखा, जब लोग न जाने कितनी कठिनाइयाँ सहकर, लंबी यात्राएँ तय करके, भीड़ की परेशानियों को झेलते हुए भी संगम तक पहुँचे। आस्था की यह शक्ति देखकर दुनियाँ अचंभित हो गई है। महाकुंभ भारतीय सँस्कृति की अमरता, इसकी आध्यात्मिकता और सामाजिक एकता का प्रतीक बनकर उभरा है। यह केवल एक धार्मिक मेला नहीं, बल्कि भारतीय समाज के मूल्यों, संस्कारों और आध्यात्मिक जागरण का एक प्रेरणादायक उदाहरण है। महाकुंभ ने हमें न केवल धर्म और अध्यात्म से और गहराई से जोड़ा है, बल्कि सेवा, त्याग, प्रेम और समर्पण का भी संदेश दिया है। एक डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालुओं के चेहरे पर जो संतोष और आनंद का भाव दिखाई दिया है, वह दर्शाता है कि यह केवल एक स्नान नहीं, बल्कि आत्मिक तृप्ति की अनुभूति है। महाकुंभ में अब तक जितने भी लोग पहुँचे हैं, उन्होंने सिर्फ जल में डुबकी नहीं लगाई, बल्कि अपने भीतर की चेतना में भी गोता लगाया है।

(लेखक प्रख्यात चिंतक, शिक्षाविद् और वक्ता हैं। वह 44 सालों तक दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहे हैं।)

profmcguptadelhi@gmail.com

महाकुम्भ की ऐतिहासिक सफलता पर अनर्गल प्रलाप क्यों ?

ललित गर्ग

महाकुंभ केवल एक धार्मिक समागम ही नहीं है, यह भारत की सँस्कृति का भी परिचायक एवं आत्मा है। इस बार महाकुंभ में जितनी बड़ी सँख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया, वह अकल्पनीय है। विश्व में इतने विशाल जनसमूह को आकर्षित एवं नियोजित करने वाले धार्मिक, सॉंस्कृतिक और सामाजिक आयोजन का कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। इस सफल एवं ऐतिहासिक आयोजन से विपक्षी दल एवं नेता बौखलाए हुए हैं और अपने बेतूके एवं अनर्गल प्रलाप से न केवल इस आयोजन की सफलता–गरिमा को धुंधलाना चाहते

हैं, बल्कि सनातन सँस्कृति का उपहास उड़ा रहे हैं। टीएमसी अध्यक्ष ममता बनर्जी ने महाकुम्भ को मृत्युकुम्भ कहा तो सपा सांसद जया बच्चन एवं कॉंग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे कहते हैं कि शवों को गंगा में बहा दिया गया, लालू यादव कहते हैं, फालतू है महाकुम्भ। इस प्रकार के गैर जिम्मेदाराना बयान सनातन धर्म के जुड़े हुए सबसे बड़े आयोजन के प्रति दिए गए हैं। ऐसे एवं कुछ अन्य विपक्षी नेताओं के भ्रामक, त्रासद एवं गुमराह करने वाले बयानों से वहाँ जाने वाले लोगों को भयभीत, आतंकित और आशंकित किया गया। इन विपक्षी नेताओं का एक वर्ग, धर्म का मखौल एवं उपहास उड़ाते हुए लोगों को तोड़ने में जुटा है और बहुत बार विदेशी ताकतें भी इन लोगों का साथ देकर देश और धर्म को कमजोर करने की कोशिश करती दिखती हैं। यह समझ में आता है कि कुछ तथाकथित प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्षतावादी लोगों को सनातन धर्म से जुड़ा हर पर्व और परंपरा रास नहीं आती, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या वे अन्य मतावलंबियों के ऐसे धार्मिक–सॉंस्कृतिक आयोजनों पर उसी तरह की टीका टिप्पणी करते हैं, जैसी उन्होंने महाकुंभ को लेकर की। आखिर हिन्दू समाज अपने अस्तित्व एवं अस्मिता पर हो रहे इन हमलों एवं आघातों के लिए कब जागरूक एवं संगठित होगा?

प्रयागराज महाकुंभ 2001, इस सहस्राब्दी का पहला कुंभ था, जो एक दुर्लभ खगोलीय संयोग के चलते 144 साल बाद हुआ है। जिसमें लगभग 62 करोड़ से अधिक लोगों के स्नान, रहने, चिकित्सा, यातायात व्यवस्था, भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता और सुरक्षा की शानदार एवं ऐतिहासिक व्यवस्थाएँ करके मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार ने न केवल देश, बल्कि दुनियाँ को चौंकाया है। यह दुनियाँ का पहला विशाल आयोजन है, जिससे भारत एवं सनातन धर्म का गर्व एवं गौरव दुनियाँ में बढ़ा है। बावजूद इसके विपक्षी नेता जिस तरह की बातें कह एवं कर रहे हैं, निश्चित ही यह उनकी राजनीतिक अपरिपक्वता, सनातन विरोधी मानसिकता को ही दर्शा रहा है, वे लगातार विभाजनकारी राजनीति को प्रोत्साहन देते हुए भूल जाते हैं कि उनके ऊपर देश को तोड़ने नहीं, जोड़ने की जिम्मेदारी है। वे जानते नहीं कि वे क्या कह रहे हैं? उससे क्या नफा–नुकसान हो रहा है या हो सकता है? वे तो इसलिए बोल रहे हैं कि वे बोल सकते हैं, उन्हें बोलने की आजादी है, लेकिन इसका नुकसान देश को भुगतना पड़ रहा है। विडम्बना देखिये कि इसका नुकसान उनको एवं उनके दल को भी हो रहा है। भारत में सनातन विरोध की राजनीति करके वे अपनी ही जड़ें उखाड़ रहे हैं, यह उनकी राजनीतिक

अपरिपक्वता को ही दर्शा रहा है।

मध्यप्रदेश के छतरपुर में बागेश्वर धाम मेडिकल एवं साइंस रिसर्च सेंटर की आधारशिला रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महाकुंभ का उल्लेख करते हुए जिस तरह कुछ विपक्षी नेताओं पर निशाना साधा, उसकी आवश्यकता इसलिए थी, क्योंकि कुछ लोग वास्तव में अनावश्यक और अनर्गल टीका–टिप्पणी करने में लगे हुए हैं। पुरानी कहावत है, मियाँ को न पाऊँ तो बीवी को नोच खाऊँ वाली स्थिति विपक्षी नेताओं एवं दलों की हो चुकी है। इसे छिद्रान्वेषी मानसिकता ही कहा जाएगा। इस प्रकार की उद्देश्यहीन, अनर्गल, उच्छृंखल एवं विध्वंसात्मक आलोचना से किसी का हित सधता हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। विपक्षी नेता अपने नजरिए को बदलें और देश में नफरत और झूठ की राजनीति करके भ्रम फैलाने की ओछी राजनीतिक हरकतों से बाज आएँ। विपक्ष जिस भाषा का प्रयोग कर रहा है, वह किसी भी सभ्य समाज को शोभा नहीं देती। विपक्षी नेताओं ने सारी हदें लांघते हुए जो तुलनाएँ की, जो अनर्गल प्रलाप किया है वह निश्चित रूप से अतिरेक या अतिशयोक्ति कही जा सकती हैं। प्रतीत होता है कि हर दिखते समर्पण की पीठ पर स्वार्थ चढ़ा हुआ है। इसी प्रकार हर अभिव्यक्ति में कहीं न कहीं स्वार्थ की राजनीति है, सत्तापक्ष को नुकसान पहुँचाने की ओछी मनोवृत्ति है।

कुछ विपक्षी नेताओं ने चुन–चुनकर इस आयोजन की समस्याओं को गिनाने में अतिरिक्त रूची दिखाई और इस क्रम में वहाँ मची भगदड़ की चर्चा करते हुए यहाँ तक कहा कि उसमें हजारों लोगों की मृत्यु हुई है। यह गैरजिम्मेदारी, मानसिक दिवालियापन एवं अपरिपक्व सोच के अतिरिक्त और कुछ नहीं। यह अच्छा हुआ कि प्रधानमंत्री ने ऐसे लोगों को कठघरे में खड़ा किया, क्योंकि वे हिंदू आस्था पर जानबूझकर प्रहार ही कर रहे थे। प्रधानमंत्री ने सही कहा कि महाकुंभ भारत की सँस्कृति, आस्था और एकता का प्रतीक है। यह ठीक है कि जिस आयोजन में प्रतिदिन एक–दो करोड़ लोगों की भागीदारी होती हो, वहाँ कुछ समस्याएँ हो सकती हैं और वे दिखीं भी, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि इस आयोजन को विफल बताने की कोशिश की जाए अथवा यह कहा जाए कि श्रद्धालुओं को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। अच्छा हो कि विपक्षी नेता यह समझें कि ऐसे आयोजनों पर उनकी बेजा एवं बेतूकी टिप्पणियाँ उन्हें राजनीतिक रूप से नुकसान ही पहुँचाती हैं।

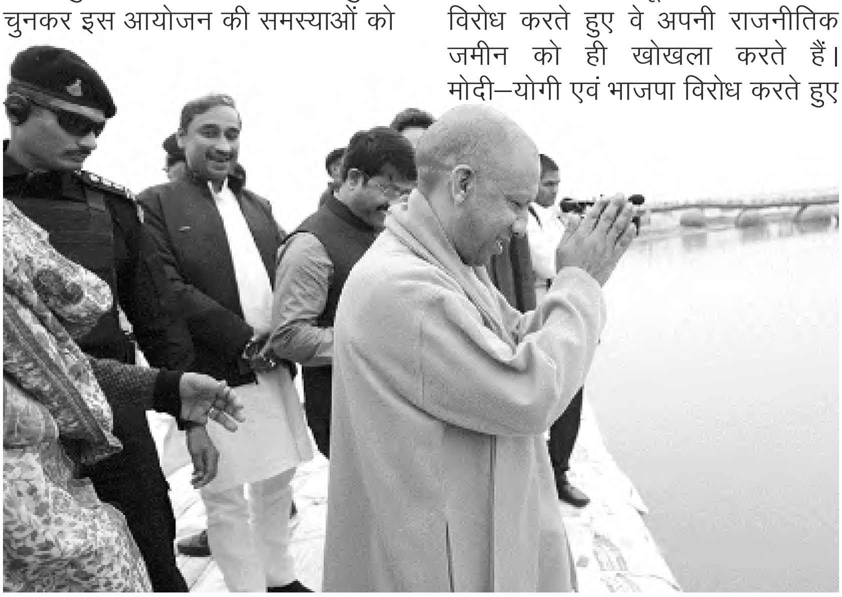

हिन्दू आस्था से नफरत करने वाले ये लोग सदियों से किसी न किसी शक्ल में रहते रहे हैं। गुलामी की मानसिकता से घिरे ये लोग हिन्दू मठों, मंदिरों, संतों, सँस्कृति व सिद्धांतों पर हमला करते हुए राजनीति करते रहे हैं। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि हिन्दू भारत का बहुसँख्य वर्ग है, भारत एक हिन्दू राष्ट्र है, उसका विरोध करते हुए वे अपनी राजनीतिक जमीन को ही खोखला करते हैं। मोदी–योगी एवं भाजपा विरोध करते हुए वे राष्ट्र एवं सनातन विरोध पर उतर आते हैं। हिन्दू पर्व, परंपराओं और प्रथाओं को गाली देते हैं, जो धर्म एवं सँस्कृति स्वभाव से ही प्रगतिशील है, विश्व मानवता को जोड़ने वाली है, उस पर कीचड़ उछाल कर वे सछिद्र नाव में सवार हैं। हिन्दू समाज को बांटना, उसकी एकता को तोड़ना ही इनका एजेंडा हैं।

महाकुम्भ कोई नया आयोजन नहीं है, बल्कि यह वैदिक परंपरा से चला आ रहा है। ऋग्वेद, अथर्ववेद और श्रीमद्भागवत महापुराण में भी इसका उल्लेख है। यह आयोजन भारतीय सँस्कृति की आत्मा है और इसे संकीर्ण राजनीतिक नजरिए से देखना अनुचित है। विपक्षी दलों के बयान ना सिर्फ उनके सनातन विरोधी चरित्र को दिखाता है बल्कि उनकी गिद्धदृष्टि को भी उजागर करता है, जो महाकुंभ के खिलाफ दुष्प्रचार की आंधी से हिन्दू धर्म एवं सँस्कृति को धुंधलाने की कुचेष्टा एवं षडयंत्र है। यह सनातन धर्म पर प्रहार न केवल निंदनीय है, बल्कि शर्मनाक भी है, जबकि विदेशों से आये मेहमानों ने महाकुंभ के भव्य, व्यवस्थित एवं सफल आयोजन की भरपूर सराहना की है, इटली से आए एक श्रद्धालु ने कहा कि यहाँ आकर जो मेरा अनुभव है, वह काफी शानदार रहा है। इटली के ही एक फोटोग्राफर ने कहा कि वह महाकुंभ की तस्वीरें लेने आए हैं। कुंभ में घूमने के समय कुछ लोगों से मिलने का मौका मिला। मुझे भारत की विविधता काफी अच्छी लगती है। उन्होंने बताया कि वह अब तक पाँच कुंभ मेलों में शामिल हो चुके हैं, लेकिन यह उन सबसे बेहतर है। ब्रिटेन से आई एक श्रद्धालु ने कहा, बहुत खुश हूँ। यह एक बहुत ही खास जगह है। यह काफी जादुई लगता है। बहुत, बहुत अच्छा, एक प्यारा अनुभव। ब्रिटेन के ही एक अन्य श्रद्धालु ने कहा कि यहाँ गंगा नदी में स्नान का अनुभव काफी अच्छा है। मैं समझता हूँ कि भारत सबसे बढ़िया देश है। इस तरह भारत के गौरव को बढ़ाने वाली इन टिप्पणियों से न केवल महाकुंभ बल्कि सनातन सँस्कृति का दुनियाँ में परचम फहराया है, बल्कि उसमें चार चांद लगे हैं।

lalitgarg11@gmail.com

डॉ. प्रवेश कुमार

भारतीय ज्ञान परम्परा क्यों आवश्यक है ?

आत्मा, ईश्वर, प्रजा, शासन, जीव जैसे न जाने कितने शब्द हैं जिनका अँग्रेजी अनुवाद सर्वथा उसकी वास्तविक अवधारणा को ही समाप्त कर देता है। इसलिए पश्चिम की भाषा और उसके अनुवाद ने भारत में कई तरह की समस्याओं को बिना किसी कारण के पैदा कर रखा है। अतः यदि किसी भी राष्ट्र की मूल भावनाओं को ठीक प्रकार से जानना है, तो उसको उसी की भाषा में जानना चाहिए।

भारतीय ज्ञान परम्परा क्यों आवश्यक है ? भारत का भारत से परिचय ही भारतीय ज्ञान परंपरा है, हमारी परंपरा जो नवीन है, सनातन है एवं परिवर्तनशील है। यह समझने की आवश्यकता है कि किसी भी राष्ट्र की अपनी प्रवृत्ति होती है, उसका स्वभाव होता है, उसकी चिति होती है, क्योंकि इसके बिना राष्ट्र की संकल्पना नहीं की जा सकती है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है। आगे स्वामी जी कहते हैं कि 'प्रत्येक समूह के राष्ट्र का अपना स्वभाव होता है। हम अध्ययन करें, तो ज्ञात होता है कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी यूनिकनेस होती है। इस दुनियाँ में जितने भी लोग हैं, सब अपने में विशेष यानि कि उनके जैसा अन्य कोई नहीं है।'

इसका अर्थ यह हुआ कि वह दुनियाँ में एक ही हैं, इसी पर तो उनका आधार बना है। इसी प्रकार से एक राष्ट्र का भी अपना स्वभाव होता है, जैसे अमेरिका का अपना एक स्वभाव है कि वह अपने मानस में ही व्यापार करने की प्रवृत्ति रखता है, इसी प्रकार हम ब्रिटेन का स्वभाव देखें तो वह साम्राज्यवादी है तथा प्रभुत्व स्थापित करने में विश्वास रखता है। वहीं जर्मनी का अपना स्वभाव है युद्ध करना, स्वभाव सौंदर्य है इसलिए वह रापेल भी खूबसूरत बना देता है।

इसी प्रकार से भारत का भी एक स्वभाव है, जो कि धर्म है। यानि कि हमारा स्वभाव ही धर्म है, अब यह धर्म की अवधारणा पश्चिम के चिंतन से उभरे रिलीजन से बिल्कुल भिन्न है। धृतिः क्षमा दमो स्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धींविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्। इसका अर्थ देखें, तो यह काफी विस्तृत है–धृति (धैर्य), क्षमा (अपना अपकार करने वाले का भी उपकार करना), दम (हमेशा संयम से धर्म में लगे रहना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (भीतर और बाहर की पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह (इन्द्रियों को हमेशा धर्माचरण में लगाना), धी (सत्कर्मो से बुद्धि को बढ़ाना), विद्या (यथार्थ ज्ञान लेना), सत्यम (हमेशा सत्य का आचरण करना) और अक्रोध (क्रोध को छोड़कर हमेशा शांत रहना) यह धर्म के दस लक्षण हैं।

इसीलिए भारत के मनुष्य को मनुष्यता के साथ जीने का संदेश दिया गया है। इसीलिए भारत का ऋषि महोपनिषद्, अध्याय 4, श्लोक 71 में कहता है कि 'अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैवः कुटुम्बकम्' अर्थ है कि यह अपना है और वह पराया है, जैसी गणना छोटे दिमाग वाले लोग करते हैं। वहीं उदार ह्रदय वाले लोगों के लिए पूरी दुनियाँ ही परिवार है, ऐसा मानते हैं। इसी प्रकार हमारा दर्शन हमारी ज्ञान परम्परा में हम 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत' सब सुखी हों, सब निरोग रहें। सब अच्छी घटनाओं को देखने वाले अर्थात् साक्षी रहें और कभी किसी को दुःख का भागी न बनना पड़े। हम ही सबको साथ–साथ ले चलने की बात करते हैं – 'सहनाववतुः सह नौ भुनत्तुः सह वीर्यं करवाव है। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। 'शान्तिः शान्तिः शान्तिः?'' अर्थ–प्रभु ! हम शिष्य और शिक्षक साथ आगे चलें, हम दोनों साथ विद्या के फल का भोग करें, हमारा किया हुआ अध्ययन प्रभावशाली हो, हम एक–दूसरे की शक्ति बनें, और हम दोनों में परस्पर द्वेष न हो। विश्व कल्याण, सामाजिक समरसता, न्याय आदि पर आधारित है

हमारी ज्ञान परम्परा। कई बार शब्दों के अनुवाद ने भी भारत को भारत के बोध से विमुख किया है।

हम अक्सर बौद्धिक परिचर्चा में राष्ट्र को नेशन कहने की भूल कर देते हैं, इसके लिए ये जानना जरूरी है कि दोनों ही चीजें अलग–अलग हैं। भारत में राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं है, बल्कि ये जीता–जागता विराट पुरुष है, हमारे यहाँ राष्ट्र की उत्पत्ति भिन्न है। हमारी मान्यता है कि ऋषियों की भद्र इच्छा से राष्ट्र का जन्म हुआ है–भद्रमिच्छन्त ऋषयः सर्वविदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे। ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ? अथर्ववेद 19.41.1 अर्थात् आत्मज्ञानी ऋषियों ने जगत के कल्याण की सदिच्छा से सृष्टि के प्रारंभ में जो दीक्षा लेकर तप किया, उससे राष्ट्र निर्माण हुआ और राष्ट्रीय बल तथा ओज भी उत्पन्न हुआ। इसलिए सब इस राष्ट्र के सामने नतमस्तक होकर इसकी सेवा करें। इस प्रकार ऋषियों की अन्तःप्रेरणा से एक राष्ट्र का जन्म होता है। हमारे द्वारा प्रदत्त इस राष्ट्र का जन्म किसी दूसरे राष्ट्र को हरा कर उस पर शासन नहीं है, अपितु 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के आधार पर सामूहिक कल्याण की भावना पर बल देता है। यही कारण है कि भारत में बहुत से राज्य और रजवाड़े होते हुए भी भारत राष्ट्र एक था। यही कारण था कि दक्षिण का व्यक्ति भी मुक्ति के लिए काशी, हरिद्वार ही आना चाहता है और उत्तर का व्यक्ति एक बार सारे ज्योर्तिलिग घूमना चाहता है। पश्चिम का 'नेशन' अपने–आप में एक राजनीतिक एवं भौतिक अवधारणा है, जो अत्यन्त संकुचित भाव को अभिव्यक्त करता है। नेशन की अवधारणा का विकास एक जैसे दिखने वाले लोगों की सॉंस्कृतिक एकता, धार्मिक एकता और उनके साँझा इतिहास को लेकर बनता है।

हमारा राष्ट्र साँझे इतिहास के साथ–साथ आपस में बंधुभाव और 'हम एक हैं' के विचार से जुड़ा हुआ है। विभिन्न प्रान्तों तथा भाषाई समूहों में संगठित भारत एक समूचा राष्ट्र है, जिसकी एक ही तात्विक पहचान है, भारतीयता और यही हमारा राष्ट्रबोध है। हम कहते हैं–'एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति' सत्य तो एक ही है, उसे संतों ने बताया भले ही भिन्न–भिन्न तरीके से है। इसीलिए हमारे यहाँ कोई आपसी विवाद नहीं हुआ, वहीं दुनियाँ के देशों में क्रिश्चियन, इस्लाम आदि ये सभी पंथ आपस में ही कितना लड़े और फलस्वरूप भिन्न–भिन्न राष्ट्र–राज्यों का जन्म हुआ। वहीं हमारे भारत में इतनी बहुलता है खाने–पहनने, रहने, पहाड़ी, समतल, जंगल कितने ही भिन्न–भिन्न प्रकार के त्योहार और भिन्न–भिन्न पूजा पद्धति हैं, लेकिन इन सबके बावजूद भी हम एक राष्ट्र हैं और हमारे राष्ट्र की आत्मा अध्यात्म है, जो राष्ट्र के सभी बंधु को आपस में जोड़ कर रखता है।

अनुवाद समाज में तमाम तरह का विवाद पैदा करता है। उदाहरण के तौर पर एक और शब्द लेते हैं पाश्चात्य देशों में 'धर्म' शब्द का अनुवाद 'रिलीजन' किया जाता है, जो अवधारणात्मक रूप से सर्वथा भिन्न है। रिलिजन जहाँ अभी की अवधारणा है और ये मुख्यतः ईश्वर की पूजा करने की विधि के साथ जुड़ा है। इसमें एक ईश्वर, एक किताब, एक पूजा विधि होना अनिवार्य है। वहीं धर्म की अवधारणा बिलकुल ही भिन्न है, हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार धर्म व्यक्ति के आचरण से जुड़ा है, धर्म के दस लक्षण मनु ने बताए हैं, जिनमें ही यह पूरी अवधारणा समझी जा सकती है।

धृतिः क्षमा दमो स्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यऽक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

मनुस्मृति 6.92।

अर्थात् धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, शौच (स्वच्छता), इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना, ये दस धर्म के लक्षण हैं। इस प्रकार हमारे यहाँ स्वीकृत धर्म का स्वरूप रिलीजन से बिल्कुल भिन्न है।

इसलिए कई बार जब हम धर्म के स्थान पर रिलीजन का प्रयोग करने लगते हैं, तो अर्थ का अनर्थ भी कर देते हैं। बाबा साहब अम्बेडकर ने अपनी पुस्तकें अधिकतर अँग्रेजी में लिखी, इसका भी परिणाम था कि वो हिंदू रिलीजन की बार–बार बात कर रहे थे न कि हिंदू धर्म की। हिंदू रिलीजन नहीं बल्कि ये एक धर्म है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं–किसी रिलीजन के लिए तीन तत्व आवश्यक हैं–एक किताब, एक पैगंबर और एक पूजा पद्धति। लेकिन हिंदू धर्म में क्या ऐसा है? यहाँ कितनी ही पूजा की पद्धतियाँ हैं, कोई ऐसा भी है जो भगवान को मानता ही नहीं है, लेकिन फिर भी सब हिंदू हैं। इसी प्रकार आत्मा, ईश्वर, प्रजा, शासन, जीव जैसे न जाने कितने शब्द हैं, जिनका अँग्रेजी अनुवाद सर्वथा उसकी वास्तविक अवधारणा को ही समाप्त कर देता है। इसलिए पश्चिम की भाषा और उसके अनुवाद ने भारत में कई तरह की समस्याओं को बिना किसी कारण के पैदा कर रखा है। अतः यदि किसी भी राष्ट्र की मूल भावनाओं को ठीक प्रकार से जानना है, तो उसको उसी की भाषा में जानना चाहिए।

(वीर अर्जुन राष्ट्रीय संस्करण से साभार)

विनाशकाले विपरीत बुद्धि

महाकुंभ के बहाने सनातन के अपमान की पराकाष्ठा

मृत्युंजय दीक्षित

प्रयागराज में दिव्य–भव्य महाकुंभ के आयोजन की तैयारियों के समय से ही इंडी गठबंधन के सभी दलों के नेता किसी न किसी बहाने इसकी आलोचना कर रहे थे, किन्तु इसके सफलतापूर्वक संचालित होते हुए देखने के बाद तो वो इसको विफल करने के लिए तरह–तरह के प्रयास कर रहे हैं और अपने वक्तव्यों से महाकुम्भ मेले की आड़ में सनातन धर्म और हिन्दू आस्था का निरंतर अपमान कर रहे हैं। खड़गे के 'क्या कुंभ में नहाने से गरीबी दूर होगी', से शुरू हुआ यह अपमान अब महाकुंभ को मृत्यु कुम्भ कहने तक जा पहुँचा है। बिहार के चारा घोटाले के मुख्य आरोपी न्यायपालिका की दया से जमानत पर बाहर घूम रहे बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने महाकुंभ को फालतू का कुंभ कहा और फिर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सभी सीमाओं को पार करते हुए महाकुंभ को मृत्यु कुंभ कह डाला, जिससे संपूर्ण हिंदू समाज आक्रोशित है।

मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति में अंधे हो चुके इन सभी दलों के नेताओं को यह महाकुंभ इसलिए रास नहीं आ रहा है, क्योंकि यह अब तक का सर्वाधिक सफल महाकुंभ बनने जा रहा है। इस महाकुंभ से सनातन हिंदू समाज की एकता का जो ज्वार उभरा है, उससे मुस्लिम परस्त दलों को अपना भविष्य अंधकारमय दिख रहा है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जिस प्रकार से महाकुंभ को मृत्युंकुभ कहा है, उससे यह साफ प्रतीत हो रहा है कि उन्हें अब 2026 में राज्य के विधानसभा चुनावों में संभावित हिन्दू एकता से भय लगने लगा है। इंडी गठबंधन के कई दलों के प्रमुख नेता जहाँ महाकुंभ की आलोचना कर रहे हैं, वहीं उन्हीं दलों के बहुत से नेता वीआईपी ट्रीटमेंट के साथ गंगा नदी में पुण्य की डुबकी लगा रहे हैं। कॉंग्रेस नेता दिग्विजय सिंह, डी.के. शिवकुमार, अजय राय, सचिन पायलट यह सभी माँ गंगा में डुबकी लगा चुके हैं।

यूपी में समाजवादी पार्टी ने तो महाकुंभ के खिलाफ एक नियमित अभियान ही चला दिया है। सपा के प्रवक्ता टीवी चैनलों पर कह रहे है कि हम विरोधी दल हैं, हमारा तो काम ही सरकार से व्यवस्था पर सवाल करना है। तो सरकार पर सवाल करो ना, सनातन पर क्यों कर रहे हो ? सपा के सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर भी महाकुंभ के खिलाफ खूब दुष्प्रचार किया जा रहा है। महाकुंभ–2025 पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के लिए सपा सांसद अफजाल अंसारी पर मुकदमा तक दर्ज हुआ है, क्योंकि उन्होंने कहा था कि संगम पर भीड़ देखकर लगता है कि स्वर्ग हाउसफुल हो जाएगा।

उत्तर प्रदेश विधान सभा सत्र में बोलते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ को फालतू कुंभ और मृत्यु कुंभ बताने वालों को सटीक और कड़ा जवाब दिया। मुख्यमंत्री ने विधानसभा में कहा कि सनातन का आयोजन भव्यता से करना अगर अपराध है, तो ये अपराध मेरी सरकार ने किया है, आगे भी करेगी। मुख्यमंत्री ने अपने बयान में सपा पर हमलावार होते हुए कहा कि सोशल मीडिया हैंडल देखें, तो वहाँ की भाषा उनके संस्कारों को प्रदर्शित करती है, यह भाषा किसी सभ्य

समाज की नहीं हो सकती। ये लोग अकबर का किला जानते थे, लेकिन अक्षयवट और सरस्वती कूप नहीं जानते थे, ये इनके सामान्य ज्ञान का स्तर है। मुख्यमंत्री ने कहा इतने बड़े सनातन धर्म के आयोजन में कोई भूखा नहीं रहा, महाकुंभ में जो आया वो भूखा नहीं गया।

मुख्यमंत्री ने संगम जल की गुणवत्ता पर उठाये जा रहे सभी सवालों का जवाब देते हुए कहा कि संगम का पानी न केवल नहाने के लिए, अपितु आचमन के लिए भी उपयुक्त है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कर दिया कि संगम व महाकुंभ को बदनाम करने के लिए लगातार झूठा अभियान चलाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि संगम और उसके आसपास के सभी पाइप और नालों को टेप कर दिया गया है और पानी को शुद्ध करने के बाद ही छोड़ा जा रहा है। उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पानी की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए लगातार निगरानी कर रहा है। आज की रिपोर्ट के अनुसार संगम के पास बीओडी की मात्रा 3 से कम है और घुलित ऑक्सीजन 8–9 के आसपास है। इसका तात्पर्य यह है कि संगम का पानी न केवल नहाने के लिए अपितु आचमन के लिए भी उपयुक्त है।

हिंदू विरोधी इंडी गठबंधन के नेताओं की हिन्दू आस्था पर आघात करने की आदत बन चुकी है। यह सभी दल हीन भावना से ग्रसित हो चुके हैं, इन्हें हिंदू समाज का उत्थान, हिंदू समाज का वैभव पसंद नहीं आ रहा है, जागृत, एकता से युक्त, एकरस हिंदू समाज इनको पसंद नहीं आ रहा है, इन सभी दलों को माँ गंगा की अविरल धारा में अपनी राजनीति समाप्त होती नजर आ रही है, जिस कारण यह सभी एक स्वर में महाकुंभ को मृत्यु कुंभ बताने लग गये हैं।

वास्तविकता यह है कि समरसता के इस समागम में सनातन सँस्कृति साकार हो रही है, आम हिंदू जन पहली डुबकी शुचिता की, दूसरी भक्ति की और तीसरी ज्ञान की लगा रहे हैं। यह महाकुंभ–2025 और संगम एकता, प्रेम, त्याग–तपस्या का प्रतीक बन चुका है। यह महाकुंभ श्रद्धा और विश्वास का समागम बन चुका है। आज संपूर्ण वैश्विक जगत महाकुंभ 2025 के आयोजन को अद्वितीय, अकल्पनीय बताकर व्यवस्था की सराहना कर रहा है। महाकुंभ में सनातन की हर धारा दृश्यमान है।

महाकुंभ की यात्रा अंतर्मन की यात्रा है और यहाँ पर आने वाला हर श्रद्धालु निष्कपट भाव से एकरस होकर एक विचार के साथ पवित्र संगम की डुबकी लगाने के लिए आ रहा है और विरोधी दलों के नेता उन सभी श्रद्धालुओं की सेवा और सत्कार करने के बजाय उन सभी की आस्था का घोर अपमान कर रहे हैं। दूर दराज से आ रहे श्रद्धालुओं के चेहरे पर कोई शिकन नहीं है, अपितु उनके मन में एक संकल्प है और वह अपने संकल्प की सिद्धि के लिए पूर्ण अनुशासन, धैर्य, संयम के साथ आगे बढ़ते जाते हैं।

ymritvsk1973@gmail.com

त्रिवेणी स्नान आस्था के साथ-साथ वैज्ञानिक महत्व भी रखता है यही सनातन है

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

आध्यात्मिक दृष्टि के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिगत जब कुम्भ स्नान किया जाता है, तो एक मानव शरीर में बहुत सारे हार्मोन्स ऐसे होते हैं, जो संतुलित हो जाते हैं। ऑक्सीटोसिन, डोपामिन, सेरोटोनिन, एंडोर्फिन्स, कोर्टिसोल, मेलाटोनिन जैसे हार्मोन्स जिनमें त्रिवेणी स्नान के पश्चात सकारात्मक बदलाव होता है, जो वैज्ञानिक शोध में प्रमाणित भी है। अब बात करते हैं श्रद्धा और विश्वास की तो सनातन में प्रकृति के प्रति सदैव ही आस्था रही है, गंगा स्नान, त्रिवेणी स्नान, यज्ञ हवन, वृक्ष पूजा आदि को मोक्ष प्राप्ति के मार्ग से जोड़कर देखा जाता है। आप देखिए जब साधारण पानी को एक पात्र में भरकर हम स्नान करते हैं, तो उस पानी को नाली आदि में बहने देते हैं, उस पानी को एकत्रित कर उससे पुनः स्नान नहीं करते, लेकिन यह महाकुम्भ है, जिसके पवित्र जल में एक साथ हजारों व्यक्ति एक ही स्थान पर, एक ही जल से स्नान करते हैं, मिनरल वाटर पीने वाले लोग भी जिस जल में स्नान करते हैं, उसी का आचमन भी करते हैं, यह वैज्ञानिक चमत्कार ही तो है, यदि इस पवित्र जल को घर में भी रखा जाए, तो यह जल बिलकुल स्वच्छ और निर्मल रहता है।

स्वर्ग जाने हेतु समर्पण और जन्नत जाने हेतु विनाश इसीलिए सनातन सर्वमान्य है – कुम्भ एक विशाल परम्परा जिसमें कोई भेद नहीं, कोई भेदभाव नहीं, समूचा सनातनी समाज माँ गंगा को अपनी माँ मानकर उनको स्पर्श कर अभिभूत और आनंदित हो जाता है। श्रद्धा का यह भाव तो मोक्ष अर्थात परमानंद प्रदान करता है। हाँ यह बात अलग है कि कुछ मजहबी पुस्तकों में दुसरों की हत्या करके ही जन्नत जाने का मार्ग बताया गया है, तभी जिहादी समाज मानवता को रौंदने पर आतुर रहता है। जिन संसाधनों से यही पृथ्वी स्वर्ग का अनुभव कराती है, सनातन में वह सब पूजनीय हैं, लेकिन जिहादी समाज उन्हीं संसाधनों के विनाश में जन्नत का मार्ग ढूंढ़ता है। यह त्रिवेणी महाकुंभ का प्रताप ही तो है कि कोई सनातनी व्यक्ति किसी भी साधना या पूजा पद्धति में विश्वास रखता हो, पर महाकुंभ में स्नान करने अवश्य पहुँच रहा है।

divyelekh@gmail.com

गुड़ी पड़वा
नवसंवत्सर-नववर्ष-वर्ष प्रतिपदा

मानसश्री डॉ.नरेन्द्र कुमार मेहता

गुड़ी पड़वा या नववर्ष क्या है ?

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा या नववर्ष का आरम्भ माना गया है। 'गुड़ी' का अर्थ होता है **विजय पताका**। ऐसा माना गया है कि शालिवाहन नामक कुम्हार के पुत्र ने मिट्टी के सैनिकों का निर्माण किया और उनकी एक सेना बनाकर उस पर पानी छिड़ककर उनमें प्राण फूँक दिये। उसी सेना की सहायता से शक्तिशाली शत्रुओं को पराजित किया। इसी विजय के उपलक्ष्य में प्रतीक रूप में ''शालिवाहन शक' का प्रारम्भ हुआ। पूरे महाराष्ट्र में बड़े ही उत्साह से गुड़ी पड़वा के रूप में यह पर्व मनाया जाता है। कश्मीरी हिन्दुओं द्वारा नववर्ष के रूप में एक महत्वपूर्ण उत्सव की तरह इसे मनाया जाता है।

इसे हिन्दू नव संवत्सर या नव संवत् भी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी। इसी दिन से विक्रम संवत् के नये साल का आरम्भ भी होता है। सिंधी नववर्ष चेटीचंड उत्सव से शुरू होता है, जो चैत्र शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। सिंधी मान्यताओं के अनुसार इस शुभ दिन भगवान् झूलेलाल का जन्म हुआ था, जो वरूण देव के अवतार हैं।

आज भी हमारे देश में प्रकृति, शिक्षा तथा राजकीय कोष आदि के चालन–संचालन में मार्च–अप्रैल के रूप में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही देखते हैं। यह समय दो ॠतुओं का संधिकाल माना जाता है। इसमें रात्रि छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। प्रकृति एक नया रूप धारण कर लेती है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति नव पल्लव धारण कर नव संरचना के लिए ऊर्जावान हो रही हो। मानव, पशु–पक्षी यहाँ तक की जड़–चेतन प्रकृति भी प्रमाद एवं आलस्य का परित्याग कर सचेतन हो जाती है। इसी समय बर्फ पिघलने लग जाती है। आमों पर बौर लगना प्रारम्भ हो जाता है। प्रकृति की हरितिमा नवजीवन के संचार का प्रतीक बनकर हमारे जीवन से जुड़ सी जाती है। इसी दिन प्रतिपदा के दिन आज से 2074 वर्ष पूर्व उज्जयिनी नरेश महाराज विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांता शकों से भारत भूमि की रक्षा की और इसी दिन से कालगणना प्रारम्भ की गई। उपकृत राष्ट्र ने भी उन्हीं महाराज के नाम से विक्रमी संवत् का नामकरण किया। महाराज विक्रमादित्य ने आज से 2081 वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का जड़ से उन्मूलन कर देश से पराजित कर भगा दिया और उनके मूल स्थान अरब में विजय की पताका फहरा दी। साथ ही साथ यवन, हूण, तुषार, पारसिक तथा कम्बोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहरा दी। इन्हीं विजय की स्मृति स्वरूप वर्ष प्रतिपदा संवत्सर के रूप में मनाई जाती रही और आज भी बड़े उत्साह एवं ऐतिहासिक धरोहर की स्मृति के रूप में मनाई जा रही है। इनके राज्य में कोई चोर या भिखारी नहीं था। विक्रमादित्य का विजय के बाद जब राज्यारोहण हुआ, तब उन्होंने प्रजा के तमाम ऋणों को माफ

कर दिया तथा नये भारतीय कैलेण्डर को जारी किया, जिसे विक्रम संवत् नाम दिया।

सबसे प्राचीन काल गणना के आधार पर ही प्रतिपदा के दिन विक्रमी संवत् के रूप में इस शुभ एवं शौर्य दिवस को अभिशिक्त किया गया है। इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के राज्याभिषेक अथवा रोहण के रूप में मनाया गया। यह दिन वास्तव में असत्य पर सत्य की विजय को याद करने का दिवस है। इसी दिन महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था। इसी शुभ दिन महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। यह दिवस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक श्री केशव बलिराम हेडगेवार के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। पूरे भारत में इसी दिन से चैत्र नवरात्र की शुरूआत मानी जाती है।

कैसे मनायें नव वर्ष–नव संवत्सर

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर दीपदान करना चाहिये। घरों में शाम को 7 बजे लगभग घण्टा–घड़ियाल व शंख बजाकर मंगल ध्वनि से नव वर्ष का स्वागत करें। इष्ट मित्रों को एसएमएस, ईमेल एवं दूरभाष से नये वर्ष की शुभकामना भेजना प्रारम्भ कर देना चाहिये। नव वर्ष के दिन प्रातःकाल से पूर्व उठकर मंगलाचरण कर सूर्य को प्रणाम करें। हवन कर वातावरण शुद्ध करें। नये संकल्प करें। नवरात्रि के नौ दिन साधना के शुरू हो जाते हैं तथा नवरात्र घट स्थापना की जाती है। नव वर्ष का स्वागत करने के लिए अपने घर–द्वार को आम के पत्तों से अशोक पत्र से द्वार पर बन्दनवार लगाना चाहिए। नवीन वस्त्राभूषण धारण करना चाहिये। इसी दिन प्रातःकाल स्नान कर हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प और जल ले कर 'ओम भूर्भुवः स्वः संवत्सर–अधिपति आवाहयामि पूजयामि च' मंत्र से नव संवत्सर की पूजा करनी चाहिये एवं नव वर्ष के अशुभ फलों के निवारण हेतु ब्रह्माजी से प्रार्थना करनी चाहिये। हे भगवन् ! आपकी कृपा से मेरा यह वर्ष मंगलमय एवं कल्याणकारी हो। इस संवत्सर के मध्य में आने वाले सभी अनिष्ट और विघ्न शांत हो जाये।

नव संवत्सर के दिन नीम के कोमल पत्तों और ऋतु काल के पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिश्री, इमली और अजवाइन मिलाकर खाने से रक्त विकार आदि शारीरिक रोग होने की संभावना नहीं रहती है तथा वर्षभर हम स्वस्थ रह सकते हैं। इतना न कर सके तो कम–से–कम चार–पाँच नीम की कोमल पत्तियाँ ही सेवन कर लें तो पर्याप्त रहता है। इससे चर्मरोग नहीं होते हैं। महाराष्ट्र तथा मालवा में पूरनपोली या मीठी रोटी बनाने की प्रथा है। महाराष्ट्रियन समाज में गुड़ी सजाकर भी बाहर लगाते हैं। यह गुड़ी नव वर्ष की पताका का ही स्वरूप है।

सच तो यह है कि विक्रम संवत् ही हमें अपनी सँस्कृति की याद दिलाता है और कम से कम इस बात की अनुभूति तो होती है कि भारतीय सँस्कृति से जुड़े सारे समुदाय इसे एक साथ बिना प्रचार–प्रसार और नाटकीयता से परे हो कर मनाते हैं। हम सब भारतवासियों का कर्त्तव्य है कि पूर्ण रूप से वैज्ञानिक और भारतीय कैलेण्डर विक्रम संवत् के अनुसार इस दिन का स्वागत करें। पराधीनता एवं गुलामी के बाद अँग्रेजों ने हमें एक ऐसा रंग चढ़ाया कि हम अपने नव वर्ष को भूल कर–विस्मृत कर उनके रंग में रंग गये। उन्हीं की तरह एक जनवरी को नव वर्ष अधिकांश लोग मनाते आ रहे हैं। लेकिन अब देशवासी को अपनी भारतीयता के गौरव को याद कर नव वर्ष विक्रमी संवत् मनाना चाहिए, जो आगामी 30 मार्च, 2025 को है।

आप सभी को नव वर्ष की अनेक–अनेक शुभकामनाएँ! यह वर्ष भारतीयों के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए भी सुख, शांति एवं मंगलमय हो।

संत गाडगे जयंती पर विहिप द्वारा शोभा यात्रा पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया

अशोकनगर। संत गाडगे जयंती की शोभायात्रा पर विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने पुष्प वर्षा कर एवं संत गाडगे जी को माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि संत गाडगे जी महान समाज सुधारक थे। आज हमारे देश में जो स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है, वह संत गाडगे जी द्वारा भी चलाया गया था। उनका अनुसरण करते हुए आज हमारे देश में हम स्वच्छता अभियान चला रहे हैं। उन्होंने स्वच्छता, शिक्षा, समाज कल्याण, अंधविश्वास रोकने जैसे समाज की मुख्य समस्यायों पर काम किया था, इसलिए संत गाडगे जी हिंदू समाज में अविस्मरणीय हैं। वह एक महान समाज सुधारक थे। उनकी जयंती पर हम उनको नमन करते हैं।

deepakmishravhp@gmail.com

महावीर की अमृतवाणी को जन-जन तक पहुंचाना जरूरी : साध्वी सुब्रतांजी

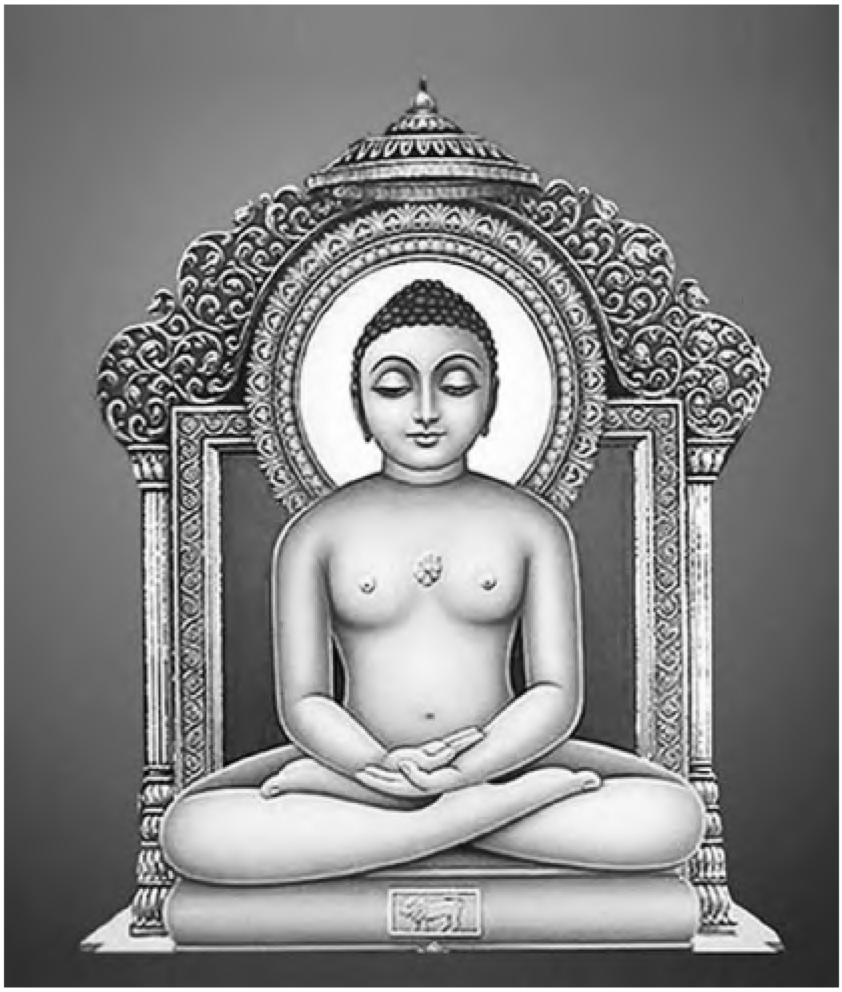

नई दिल्ली, 15 फरवरी 2025। आचार्य श्री महाश्रमण की विद्वान शिष्या शासनश्री साध्वीश्री सुब्रतांजी ने कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, सहअस्तित्व एवं शांति की अमृतवाणी को जन–जन तक पहुँचाने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है। आज का मनुष्य तनाव, अशांति, आतंकवाद एवं हिंसा के माहौल में जीवन जी रहा है, उसमें महापुरुषों की अमृतवाणी ही शांति, संतुलन एवं सुख का माध्यम बन सकती है। जैन तीर्थंकरों के साथ–साथ आचार्यों एवं मुनिजनों के उपदेश शांतिपूर्ण जीवन का आधार है। आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण एवं तीर्थंकरों की वाणी को संचार माध्यमों के द्वारा देश और दुनियाँ में पहुँचाने की दृष्टि से अमृतवाणी संस्था अनूठा कार्य कर रही है।

साध्वीश्री सुब्रतांजी मेहरौली के तेरापंथ भवन में कालूकुंज में अमृतवाणी कार्यालय के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए अपना उद्बोधन प्रदत्त कर रही थी। समारोह की अध्यक्षता जैन विश्वभारती के उपाध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद ने की, जबकि समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री जोधराज बैद थे। विदित हो कि अमृतवाणी चार दशकों से तीर्थंकरों के उपदेशों एवं आचार्यों की वाणी को विभिन्न टीवी चैनलों एवं यूट्यूब के माध्यम से प्रतिदिन देश और दुनियाँ में पहुँचाने का उल्लेखनीय कार्य कर रही है। अब तक इसका प्रधान कार्यालय लाडनूं राजस्थान में रहा है, अब इस कार्यालय को दिल्ली में अधिक नियोजित ढंग से संचालित करने के लिए इस कार्यालय का उद्घाटन किया गया। अमृतवाणी के संरक्षक श्री सुखराज सेठिया ने संस्था का परिचय प्रस्तुत करते हुए समाजभूषण श्री जेसराज सेखानी की उल्लेखनीय सेवाओं का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि अमृतवाणी आचार्यों की वाणी को संरक्षित, सुरक्षित और सम्प्रेषित करने का कार्य कर रही है। इस अवसर पर श्री पन्नालाल बैद ने कहा आज के संचार युग में गुरुओं की वाणी को देश और दुनियाँ में पहुँचाकर अमृतवाणी ने एक महा क्रांति घटित की है। यह संस्था बीज से वटवृक्ष बनकर आधुनिक जीवन में धर्म को स्थापित करने का महान कार्य कर रही है। कार्यक्रम का संयोजन श्री संदीप डूंगरवाल ने कुशलता से किया है।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष श्री ललित दूगड़ एवं महामंत्री श्री अशोक पारख ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली का कार्यालय का स्थान प्रदत्त करने के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अमृतवाणी को उल्लेखनीय सेवाएँ देने वाले कार्यकर्ताओं का पटका पहनाकर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन दिल्ली सभा के महामंत्री श्री प्रमोद घोड़ावत ने ज्ञापित किया। इस समारोह से पूर्व जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्री सुशील डागा एवं श्री सुशील बैंगानी ने उद्घाटन प्रक्रिया को संपन्न कराया। इस समारोह में देश के विभिन्न भागों से विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। समारोह के पश्चात शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के समाधि स्थल वात्सल्य पीठ पर सभी ने मंगल पाठ सुनकर अमृतवाणी कार्यालय के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त की। समारोह में श्री संपतमल नाहाटा, श्री गोविंद बाफना, श्री जसराज मालू, श्री सुशील कुहार, श्री अमरचंद कुंडलिया आदि की विशेष उपस्थिति रही।

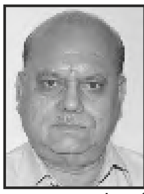

अजय कुमार (लखनऊ)

अखिलेश पर भारी पड़ रहा है महाकुंभ का विरोध

समाजवादी पार्टी आजकल दुविधा की सियासत से जूझ रही है। उसके एक तरफ कुआँ, तो दूसरी तरफ खाई जैसी स्थिति है। इसी कारण समाजवादी पार्टी तुष्टिकरण की सियासत तो खुलकर कर रही है, लेकिन हिन्दूवादी राजनीति को लेकर कोई फैसला नहीं ले पा रही हैं। सपा की हालात यह हो गई है कि मोदी–योगी सरकार के हर फैसले में अखिलेश को साम्प्रदायिकता और खामियों के अलावा कुछ नजर नहीं आता है। धर्म की बात की जाये तो अखिलेश महाकुंभ में खामियाँ तलाश रहे हैं। हाल यह है कि महाकुंभ के सफल आयोजन को लेकर जहाँ बच्चा–बच्चा योगी की तारीफ कर रहा है। वहीं अखिलेश और उनकी टीम मौनी अमवस्या के शाही स्नान के समय मची भगदड़ में हुई तीस लोगों की मौत पर राजनीति करने से उबर नहीं पा रही है, जिस समाजवादी पार्टी की मुलायम सरकार ने 1990 में अयोध्या में कारसेवकों पर अंधाधुंध गोलियाँ बरसा कर उन्हें मौत के घाट पर सुला दिया था, इसमें कितने लोग मरे थे, यह आज भी रहस्य बना हुआ है। खास बात यह है कि योगी सरकार कह रही है कि भगदड़ में तीस लोग मरे हैं, वहीं समाजवादी पार्टी, नेता इसे झूठ बता रहे है। सपा नेता तर्क दे रहे हैं कि हजारों जूते–चप्पलें और बैग घटना स्थल पर पड़े मिले थे, जिससे साबित होता है कि हजारों लोग मरे होंगे, लेकिन सवाल यह है कि यदि समाजवादी पार्टी के प्रमुख सहित अन्य तमाम नेताओं और काँग्रेस नेता राहुल गाँधी आदि की यह बात मान भी ली जाये कि भगदड़ में हजारों लोग मरे हैं, तो वह पीड़ित लोग सामने क्यों नहीं आ रहे हैं, जिनके परिवार के लोग भगदड़ में मारे गये हैं। यही बात बताती है कि विपक्ष भगदड़ के नाम पर महाकुंभ और योगी सरकार को बदनाम करने की साजिश में लगे हैं। इसीलिये अखिलेश का साथ दलित और पिछड़े लोग भी छोड़ने लगे हैं। आज अखिलेश सिर्फ मुस्लिमों के नेता बनकर रह गये हैं, उसमें भी उदारवादी और पढ़े लिखे

मुसलमान बीजेपी के साथ जुड़ते जा रहे हैं।

वैसे यह भी नहीं भूलना चाहिए कि अखिलेश यादव शुरू दिन से महाकुंभ का विरोध कर रहे हैं। यह बात विधानसभा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी कही कि पहले दिन से सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अफवाह फैलाने में लगे हैं। अखिलेश सबसे पहले कहते हैं कि महाकुंभ को इतना पैसा और विस्तार देने की जरूरत क्या थी। फिर कहते हैं कि 65–70 की आयु के लोग महाकुंभ में स्नान नहीं कर पा रहे हैं। फिर कहते हैं महाकुंभ जैसा कोई शब्द ही नहीं है। महा सरकारी पैसा निकालने के लिये महाकुंभ शब्द रचा गया। अखिलेश तंज कसते हैं कि 50 नहीं 60 करोड़ लोग आ चुके हैं। इसी तरह से लालू यादव महाकुंभ को फालतू बताते हैं तो पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी महाकुंभ को मृत्यु कुंभ बताती हैं, लेकिन कोई इसका विरोध नहीं करता है। इसी तरह से सोशल मीडिया पर इधर–उधर की फोटो और वीडियो को महाकुंभ की घटना बता कर प्रचारित किया जा रहा है।

गौरतलब हो, आज महाकुंभ पर हो हल्ला मचाने वाले समाजवादी इससे पूर्व अयोध्या में रामलला के मंदिर निर्माण के समय भी ऐसा करते नजर आये थे। सपा प्रमुख अखिलेश यादव तो मंदिर निर्माण के उदघाटन अवसर पर भी मौजूद नहीं रहे थे। कारण बहुत साफ था कि चुनाव के समय उन्हें ईवीएम और चुनाव आयोग में खामियाँ नजर आती हैं। योगी जब अवधी, भोजपुरी, बुंदेलखंडी भाषा को आगे बढ़ाने की बात करते हैं, तो समाजवादी उर्दू को आगे बढ़ाने का राग अलापने लगते हैं।

समाजवादी पार्टी के नेताओं को समझना होगा कि यूपी में जिस भारतीय जनता पार्टी को सपा के पूर्व प्रमुख मुलायम सिंह यादव ने अपने सियासी अखाड़े में कभी उभरने नहीं दिया, उसी भारतीय जनता पार्टी को अखिलेश यादव की गैर जिम्मेदाराना और अपरिपक्व राजनीति ने अपनी सियासत चमकाने का पूरा मौका दे दिया। समाजवादी पार्टी मुलायम सिंह के नेतृत्व में 2012 में अंतिम बार चुनाव जीती थी और अखिलेश सीएम बने थे, उसके बाद से आज तक अखिलेश अपने बल पर कोई बड़ा करिश्मा नहीं कर पाये हैं। 2024 के आम चुनाव में जरूर समाजवादी पार्टी को बढ़त मिली थी, लेकिन अखिलेश काँग्रेस की बैसाखी के सहारे यह सफलता हासिल कर पाये थे। आज स्थिति यह है कि काँग्रेस का साथ लेकर सपा उन सीटों पर भी जीत नहीं हासिल कर पा रही है, जिसे कभी समाजवादी पार्टी की परम्परागत सीट माना जाता था। पहले विधान सभा चुनाव के समय मुरादाबाद की कुंदरकी और हाल ही में अयोध्या में मिल्कीपुर सीट पर सपा को मिली हार से यह साबित हो गया है कि अखिलेश यादव अपना जनाधार नहीं बचा पा रहे हैं। यह और बात है कि अखिलेश दिल्ली में आम आदमी पार्टी को जिताने का दंभ जरूर भरते हैं। यही अखिलेश और समाजवादी पार्टी की नियति बन गई है। कुल मिलाकर अखिलेश यादव अपने ही बुने जाल में फंसते जा रहे हैं।

प्रयागराज देश का पहला नगर, जहाँ बने 13 कारीडोर

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

12 कॉरीडोर धार्मिक स्थलों पर, एक एयरपोर्ट से संगम तक पर्यटक कॉरीडोर और एक औद्योगिक कॉरीडोर भी प्रयागराज में बन रहा है। कॉरीडोर कई धार्मिक स्थलों पर, तीर्थों में बनाये गए हैं। जिनमें बनारस में काशी विश्वनाथ कॉरीडोर, उज्जैन में महाकाल मन्दिर कॉरीडोर, केदारनाथ धाम कॉरीडोर, सोमनाथ मन्दिर कॉरीडोर, तेलंगाना में भगवान नृसिंह का ययाद्री मंदिर कॉरीडोर बन चुके है। मथुरा–वृंदावन कॉरीडोर, बांके बिहारी मंदिर कॉरिडोर, श्रीकृष्ण जन्मभूमि कॉरीडोर, अयोध्या में श्रीराम मन्दिर कॉरीडोर, असम के गुवाहाटी में माँ कामाख्या देवी मन्दिर कॉरीडोर का काम चल रहा है। राजस्थान में गोविंद देव मंदिर कॉरीडोर, तीर्थराज पुष्कर कॉरीडोर और बेनेश्वरधाम कॉरीडोर का विकास हो रहा है। मध्यप्रदेश में ओंकारेश्वर लोक, चित्रकूट में बनवासी रामपथ गमन लोक, ओरक्षा में रामराजा लोक, छिंदवाड़ा में हनुमान मंदिर लोक, सलकनपुर में श्रीदेवी महालोक, सागर में रविदास धाम कॉरीडोर, दतिया में पीतांबरा पीठ कॉरिडोर, इंदौर में अहिल्या नगरीय लोक, महू में भगवान परशुराम जन्मस्थली पर जानापाव कॉरीडोर, बिहार में उच्चौठ भगवती स्थान से महिषी तारास्थान को जोड़ने वाले कॉरीडोर का काम शुरू हो चुका है। ग्वालियर में शनि लोक और बड़वानी में नाग लोक की घोषणा हुई है।

क्यों बन रहे हैं कॉरीडोर?

ये कॉरीडोर इसीलिए भी बनाये जा रहे हैं कि मन्दिरों पर बढ़ते श्रद्धालुओं के ज्वार से सम्बन्धित राज्य सरकारों को अकूत राजस्व की प्राप्ति हो रही है। देश को आगे बढ़ाने में जितना योगदान अर्थव्यवस्था के अन्य सेक्टर्स का है, उससे कम योगदान तीर्थों से होने वाले आय का नहीं है। अभी प्रयागराज में त्रिवेणी संगम पर आयोजित 45 दिनों के महाकुम्भ में जब 66.30 करोड़ लोग डुबकी लगाने आए, तो उत्तरप्रदेश की राज्य सरकार की अर्थव्यवस्था को इससे लगभग 4 लाख करोड़ रूपए का लाभ प्राप्त हुआ। मन्दिरों का कॉरीडोर बनने से मन्दिरों में आने वाले श्रध्दालुओं की सँख्या बढ़ती है, जब लोग तीर्थों में आते हैं, तो अनेक प्रकार के खर्च करते हैं और इससे स्थानीय व्यापारियों और सेवा उपलब्ध कराने वालों को तो लाभ होता ही है, राज्य सरकार को भी भरपुर राजस्व की प्राप्ति होती है। महाकुम्भ के आयोजन से पुर्व उत्तरप्रदेश की राज्य सरकार ने प्रयागराज में 12 धार्मिक कॉरीडोर बना दिए थे। इसके अतिरिक्त एक कॉरीडोर हवाई अड्डे से संगम तक भी बना दिया गया। आईए जानते हैं इन तेरह कॉरीडोर के बारे में।

प्रयागराज में 12 कॉरीडोर

प्रयागराज देश में प्रथम नगर है, जहाँ 12 कॉरीडोर बनाये गए हैं। एयरपोर्ट से संगम तक बने एक वीआईपी कॉरीडोर एवं एक औद्योगिक कॉरीडोर को जोड़ लिया जाए, तो प्रयागराज में कुल 14 कॉरीडोर बनाए गए हैं। सूचि निम्नवत है–

1. अक्षयवट समुद्रकूप कॉरीडोर

अक्षयवट, सरस्वती कूप, पातालपुरी और त्रिवेणी पुष्प को मिलाकर कॉरिडोर बनाया गया है। सेना के अधिकार वाले क्षेत्र में होने की वजह से कॉरिडोर बनाने की जिम्मेदारी एमईएस यानी मिलेट्री इंजीनियरिंग सर्विसेज को दी गई थी।

2. सरस्वती कूप कॉरीडोर

सरस्वती कूप में माता सरस्वती की धारा प्रवाहमान दिखाई देती है। इसमें रंग डालकर यह परीक्षण किया जा चुका है कि इसकी धारा का जल संगम तक पहुँचता है। यह भूमिगत धारा सरस्वती कूप में प्रकट होती है। यहाँ माता सरस्वती की मूर्ती स्थापित की गई है।

3. पातालपुरी कॉरीडोर

यह वह स्थान है, जहाँ से हनुमान जी श्रीराम–लक्ष्मण की अहिरावण से रक्षा करने के लिए पाताल गए थे। इसीलिए इस स्थान को पातालपुरी कहा जाता है।

4. बड़े हनुमान मंदिर कॉरीडोर

यहाँ हनुमान जी की लेटी हुई प्रतिमा स्थापित है। यह संगम के निकट ही स्थित है।

5.महर्षि भारद्वाज आश्रम कॉरीडोर

भगवान राम जिस पुष्पक विमान से रावण का वध करके अयोध्या वापस लौट रहे थे, इसका निर्माण भारद्वाज मुनि ने किया था। वहीं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी महर्षि भारद्वाज के काफी प्रयोग मिलते हैं। इस कॉरिडोर में महर्षि भारद्वाज का आश्रम, माता अनुसूया का मंदिर, अति प्राचीन श्री राम जानकी मंदिर, माँ काली मंदिर, देवी दुर्गा का मंदिर एवं अन्य प्रमुख ऋषि मुनियों के आश्रम एवं मंदिर विद्यमान हैं।

6. नागवासुकि कॉरीडोर

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में नागवासुकी मंदिर स्थित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, समुंद्र मंथन के बाद नागराज वासुकी ने यहीं पर विश्राम किया था। दारागंज के उत्तरी कोने पर अति प्राचीन नागवासुकी मंदिर स्थित है।

7. श्रृंगवेरपुर धाम कॉरीडोर

रामायण में इस बात का उल्लेख है कि वनवास के लिए अयोध्या से चलकर प्रभु श्रीराम प्रयागराज के श्रृंगवेरपुरधाम पहुँचे थे। यह वही स्थान है, जहाँ भगवान राम और निषादराज का मिलन हुआ था। अयोध्या से चलकर प्रभु राम ने यहीं पहली बार गंगा पार की थी।

8. द्वादश माधव कॉरीडोर

ये 12 रक्षक न होते तो नष्ट हो जाता प्रयागराज! सृष्टि की रचना के बाद इन्हीं 12 वेदियों पर 12 माधव (द्वादश माधव) की स्थापना ब्रह्म देव ने ही की, जिन्हें बाद में महर्षि भारद्वाज ने फिर से स्थापित किया था। माना जाता है कि संगम में कल्पवास और स्नान का पूर्ण

फल तभी प्राप्त होता है, जब श्रद्धालु इन 12 माधव मंदिरों की परिक्रमा करते हैं। वेणी माधव को प्रयागराज की सुरक्षा का देवता, उसका अधिष्ठाता और प्रथम पूज्य माना जाता है।

9. मनकामनेश्वर मन्दिर कॉरीडोर

श्री मनकामेश्वर मंदिर में हुए कायाकल्प के कार्य में राजस्थान के लाल पत्थरों का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा मंदिर में भक्तों के लिए एक सत्संग भवन भी तैयार किया गया है। मंदिर की दीवारों पर म्यूरल बनाया गया है।

10. माँ अलोपशंकरी कॉरीडोर

देवी का प्राचीन है, यहाँ देवी की प्रतिमा स्थापित नहीं है, बल्कि उनके प्रतीक स्वरूप चुनरी में लिपटे पालने की पूजा होती है। इस मंदिर का पुराणों में भी वर्णन बताया जाता है। मान्यता है कि माँ सती के हाथ का पंजा यहाँ गिरने के बाद विलुप्त हो गया था। इसी कारण इस शक्तिपीठ का नाम अलोपशंकरी हुआ। इसे अलोपीदेवी के नाम से भी जानते हैं।

11. पडीला महादेव कॉरीडोर

प्रयाग के पाँचकोशी यात्रा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) के उत्तर में जनपद मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर (इलाहाबाद– प्रतापगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग 96) फाफामऊ के थरवई गाँव में स्थित हैं। श्री कृष्ण की सलाह पर यहाँ पाण्डवों ने शिवलिंग की स्थापना अपने वनवासकाल के दौरान किया था। यह मन्दिर पूर्ण रूप से पत्थरों से बना हुआ है। गजेटियर के अनुसार यहाँ शिवरात्रि व फाल्गुन कृष्ण 15 को मेला लगता है।

12.तक्षक तीर्थ कॉरीडोर

संगम नगरी में यमुना किनारे तक्षकेश्वर नाथ मंदिर विश्व का एकलौता तक्षक तीर्थ स्थल है। वर्तमान में यह स्थान प्रयागराज शहर के दक्षिणी क्षेत्र में दरियाबाद मुहल्ले में स्थित है। यह स्थल आदिकाल से संरक्षित है और यहाँ शेषनाग के अवशेष आज भी मौजूद हैं। यह यमुना तट पर विशाल घने जंगलों में स्थापित शिवलिंग था।

13.वीआईपी कॉरीडोर (हवाई अड्डा से संगम– 16 किमी)

वीवीआईपी कॉरिडोर में पड़ने वाले चौराहों पर नटराज, नंदी, ऋषि–मुनियों की कलाकृतियाँ लगाई गई हैं। वहीं प्रयागराज एयरपोर्ट से आधा किलोमीटर आगे 84 विशेष स्तंभ लगाए गए हैं, जो चौरासी स्तंभ सृष्टि के सार का प्रतीक हैं। सनातन परंपरा में 84 लाख योनियाँ बताई गई हैं, यहाँ 84 स्तंभ उन्हीं के प्रतीक हैं। लाल पत्थर से तैयार किए जा रहे खंभों पर भगवान शिव के सहस्त्र नाम भी अंकित किए गए हैं। सड़कों के किनारे पौधे लगाए गए हैं, जिनमें फूलों के भी पौधे शामिल हैं।

देश में कुल 12 औद्योगिक कॉरीडोर घोषित हुए हैं, जिनमें दो औद्योगिक कॉरीडोर उत्तरप्रदेश को मिले हैं–

14.प्रयागराज कॉरीडोर – सरस्वती हाईटेक सीटी प्रोजेक्ट के बगल में, 658 करोड़ की लागत से, 18000 रोजगार सृजन की क्षमता से युक्त, 1600 करोड़ रूपये के निवेश को आकर्षित करेगा, 352 एकड़ भूमि पर विकसीत होगा, जबकि वाणिज्य मंत्रालय को न्यूनतम 1000 एकड़ भूमि चाहिए, किन्तु उत्तरप्रदेश सरकार के विशेष अनुरोध पर यह कॉरीडोर बनाया जा रहा है। एनएच 35, एनएच 30, प्रयागराज रेलवे स्टेशन एवं प्रयागराज एयरपोर्ट से बहुत निकट है।

15.आगरा कॉरीडोर– 1058 एकड़ भूमि पर, 1812 करोड़ की लागत से, 3447 करोड़ के निवेश को आकर्षित करेगा, यमुना एक्सप्रेस वे और एनएच 19 से दो किलोमीटर की दूरी पर, आगरा एयरपोर्ट से 25 किलोमीटर एवं जेवर एयरपोर्ट से 140 किलोमीटर।

प्रयागराज में आये श्रद्धालु वहाँ से निकट स्थित तीर्थों में भी बड़ी सँख्या में गए। अयोध्या, बनारस, नैमिषारण्य, चित्रकूट, गोरखपुर भी बड़ी सँख्या में श्रद्धालु पहुँचे। अयोध्या में तो मौनी अमावस्या के आसपास इतने श्रद्धालु पहुँचे कि तीर्थक्षेत्र न्यास को पत्र जारी कर के यह कहना पड़ा कि कृपया अब आपलोग अयोध्या न आयें, यहाँ इतने श्रद्धालुओं को समाहित करने का स्थान उपलब्ध नहीं है। लेकिन महाकुम्भ में आए इन श्रद्धालुओं ने अपनी यात्रा की दिशा से सरकार को तीर्थयात्रा के लिए कुछ नये कॉरीडोर बनाने का विचार दे दिया। सरकार को यह समझ में आ गया कि यदि उपरोक्त गंतव्यों के लिए कॉरीडोर बना दिए गए, तो तीर्थयात्रियों की यात्रा सुगम हो जाएगी और तीर्थयात्रियों की सँख्या बढ़ाकर इससे राज्य का राजस्व बढ़ाया जा सकता है। महाकुम्भ के समापन कार्यक्रम में बोलते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उनका आध्यात्मिक पर्यटन के पाँच नये स्थलों पर ध्यान गया और इनके लिए कॉरीडोर बने यह आवश्यकता अनुभव हुई। उन्होंने कहा कि प्रयागराज महाकुम्भ ने उत्तर प्रदेश के अंदर पाँच आध्यात्मिक पर्यटन के स्थल उपलब्ध करा दिए हैं।

1. प्रयागराज से मिर्जापुर और काशी,
2. प्रयागराज से अयोध्या और गोरखपुर,
3. प्रयागराज से लालापुर, राजापुर, चित्रकूट,
4. प्रयागराज से लखनऊ और नैमिषारण्य और
5. प्रयागराज से बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे व आगरा होते हुए मथुरा–वृंदावन।

ये पाँच कॉरीडोर बन जाने पर प्रयागराज में उपलब्ध कॉरीडोर की सँख्या 18 हो जाएगी। प्रयागराज देश की साँस्कृतिक राजधानी है। दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों की तर्ज पर यहाँ रिंग रोड और आउटर रिंग रोड बनाने की आवश्यकता है। प्रयागराज में बनने वाली सड़कों पर दो चौड़े लेन पैदल यात्रियों के लिए बनाया जाना चाहिए। प्रयागराज में मेट्रो ट्रेनों का भी एक अच्छा नेटवर्क तैयार करने की आवश्यकता है। जिससे आवागमन अत्यंत सुगम हो सके। जिन पाँच कॉरीडोर की बात योगी जी ने महाकुम्भ के समापन के अवसर पर किया है, उन सभी कॉरीडोर के समानांतर रेलवे का भी कॉरीडोर बनाया जाना चाहिए। गंगा और यमुना के सभी तटों पर रीवर फ्रंट भी बनाया जाना चाहिए। प्रयागराज के सभी रेलवे स्टेशनों की क्षमता बढ़ाया जाना चाहिए। महाकुम्भ के 45 दिनों में 100 देशों का प्रतिनिधित्व प्रयागराज में हुआ है, जिसमें 74 देशों के एंबेसडर और हाई कमिश्नर यहाँ आए थे, 12 देशों के मंत्रियों और राष्ट्राध्यक्षों की उपस्थिति भी रही थी।

अधारणीय वेगों को रोकने से रोग उत्पन्न होते हैं

धारणीय वेग (रोके जाने योग्य वेग)

जीवितावस्था में और मृत्यु के पश्चात जन्मान्तर में भी अपना हित चाहने वाले व्यक्तियों को अशस्त (निषिद्ध), साहस तथा मन, वचन एवं शरीर के निन्दित कर्मों के वेगों को रोकना चाहिए। — महर्षि चरक।

1. बुरे मानसिक धारणीय वेग लोभ, शोक, भय, क्रोध, अहंकार, निर्लज्जता, ईर्ष्या, अतिराग (प्रेम), दूसरे का धन लेने की इच्छा आदि मानस वेगों को रोकना चाहिए।
2. बुरे वाचिक धारणीय वेग अत्यन्त कठोर वचन, चुगलखोरी, झूठ बोलना और अकालयुक्त वचन इनके वेगों को धारण करना चाहिए।
3. अशस्त शारीरिक धारणीय वेग, दूसरे को पीड़ा देने वाले शरीर के कर्म, परस्त्री गमन, चोरी और हिंसा से उत्पन्न वेगों को रोकना चाहिए।

उपर्युक्त वेग धारण से लाभ — उपर्युक्त नियमों का पालन करने से मनुष्य के मन, वचन और कर्म पापरहित हो जाते हैं। जिससे वह पुरूष पुण्य का भागी होता है तथा सुख पूर्वक धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त कर उसके फलों का उपभोग करता है। उपरोक्त वेगों को धारण न करने पर ही आजकल मानस रोगों से पीड़ित रोगियों की सँख्या में दिनों—दिन बढ़ोत्तरी हो रही है।

अधारणीय वेग (वे वेग जो कभी नहीं रोकना चाहिए)

1. इस प्रकार के वेग किसी न किसी शरीर क्रिया से संम्बन्धित हैं, जो स्वभाविक होते है। उन्हें यदि रोका जाता है, तो अनेकों व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जिन्हें बुद्धिमान व्यक्ति कभी नहीं रोकते हैं।
2. मूत्र रोकने से होने वाले रोग मूत्र कृच्छ, पेशाब में जलन, पेडू में दर्द, शिर में वेदना।
3. पुरीष (मल) वेग को रोकने से होने वाले रोग सिर में दर्द, कोष्ठ बद्धता, आध् मान, उदरशूल।
4. शुक्रवेग को रोकने से होने वाले रोग वृषण में दर्द, अंगमर्द, ह्रदय में वेदना, मूत्र का रूक—रूक कर आना।
5. अपान वायु के वेग को रोकने से होने वाले रोग वात व्याधियाँ, कब्ज, उदर शूल, थकान, आध्मान।
6. वमन का वेग को रोकने से होने वाले रोग कण्डू, भोजन में अरूचि, पाण्डू, ज्वर, चर्म विकार।
7. छींक का वेग रोकने से होने वाले रोग शिरःशूल, जीर्ण, प्रतिश्याय, अर्दित ।
8. डकार के वेग को रोकने से होने वाले रोग ह्रदय और छाती में जकड़ाहट। हिचकी, श्वास, भोजन में अरूचि
9. जम्हाई के वेग को रोकने से होने वाले रोग आक्षेप, शून्यता, शरीर तथा हाँथ पैरो में कम्प रोग।
10. क्षुधा (भूख) वेग को धारण करने से होने वाले रोग कृशता, दुर्बलता, अंगों में वेदना, अरूचि, चक्कर आना।
11. प्यास वेग को रोकने से होने वाले रोग कण्ठ और मुख सूखना, बहिरापन, थकावट, अवसाद और ह्रदय में दर्द।
12. आँसू वेग रोकने से होने वाले रोग चक्कर, शिरःशूल। प्रतिश्याय, नेत्ररोग, ह्रदय के रोग, अरूचि,
13. निद्रावेग को रोकने से होने वाले रोग जम्हाई, अंगों का टूटना, मानसिक रोग, नेत्र रोग, पेट के रोग।
14. परिश्रम करने से उत्पन्न श्वास के वेगों को रोकने से होने वाले रोग — गुल्म, ह्रदय रोग, मूर्च्छारोग।

विहिप-गोरक्षा विभाग द्वारा प्रयागराज महाकुंभ में आयोजित

गोरक्षा सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

भारत कृषि प्रधान देश है और गोधन इसकी आत्मा है। गोसंरक्षण एवं संवर्द्धन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण संतुलन, जैव विविधता, जैविक कृषि और सॉंस्कृतिक विरासत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की सनातन सँस्कृति में गोमाता को माता का स्थान प्राप्त है और उसके संरक्षण से ही देश की सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक उन्नति संभव है। गोचर भूमि का अतिक्रमण, गोवध, गोवंश तस्करी एवं दुग्ध उत्पादन के चक्कर में भारतीय नस्लों के गोवंशों का विदेशी नस्लों के संयोग से नस्ल संहार कर हमारी परंपरागत गो–आधारित कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गंभीर क्षति पहुँचाई गई। ऐसे में गोसंरक्षण केवल धार्मिक विषय न होकर, संपूर्ण राष्ट्र की समृद्धि एवं अस्तित्व का अनिवार्य अंग बन चुका है। कुंभ केवल एक पर्व नहीं, बल्कि यह भारत की सनातन सँस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा और राष्ट्रधर्म का महानतम संगम है। 2025 के इस महाकुंभ का शुभ अवसर, जब भारत अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है, हमारी सॉंस्कृतिक चेतना को जागृत करने और राष्ट्र की गौरवशाली विरासत को पुनर्स्थापित करने का पावन क्षण है। यह पुण्यकाल, जिसमें लिए गए संकल्प निश्चित रूप से सिद्ध होते हैं, हमें गोसंरक्षण एवं राष्ट्र रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने की प्रेरणा देता है। प्रयागराज के पावन संगम तट पर विश्व हिंदू परिषद–गोरक्षा विभाग (भारतीय गोवंश रक्षण एवं संवर्द्धन परिषद) के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय गोभक्त अधिवेशन में हम सभी गोभक्त, संत समाज, महापुरुष, कृषक वर्ग, गोरक्षक एवं गोपालक एकजुट होकर गोसंरक्षण, गोवंश संवर्द्धन और गोचर भूमि की रक्षा हेतु संकल्पित हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर, हम केंद्र एवं राज्य सरकारों से आग्रह करते हैं कि गोसंरक्षण एवं संवर्द्धन को प्राथमिकता दी जाए और निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए।

1. गाय को राष्ट्रीय सॉंस्कृतिक धरोहर घोषित करते हुए गोपाष्टमी को राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाए।
2. भारतीय नस्ल की गायों के संरक्षण–संवर्द्धन हेतु गो–संवर्द्धन मंत्रालय की स्थापना की जाए।
3. गोहत्या रोकने के लिए केन्द्रीय स्तर पर कठोर कानून बनाया जाए और इसका सख्ती से पालन कराया जाए।
4. गोचर भूमि को अतिक्रमण मुक्त कर गोचर प्राधिकरण का गठन किया जाए तथा गौशालाओं एवं गोचर भूमि के विकास के लिए सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाए।
5. देश भर में हो रही अवैध गोवंश की तस्करी को रोकने के लिए इसे गैर जमानतीय अपराध घोषित करते हुए कठोर दंड का प्रावधान किया जाये तथा गोवंशों की तस्करी एवं वध से सम्बंधित अपराधों के निवारण के लिए प्रत्येक थाने में विशेष पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की जाए।
6. कत्लखानों के स्थान पर गो–अभयारण्य स्थापित किए जाएँ।
7. मांस निर्यात नीति में संशोधन करते हुए भारत से मांस निर्यात पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जाए।

8. जेलों में गौशालाएँ खोलकर इस सकारात्मक क्रांति को सफल बनाया जाए, जिससे कैदियों का श्रम गोसेवा में लगे और उन्हें सुधार का अवसर मिले।
9. गोवंश आधारित अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाए और गो–ग्राम आधारित कृषि, स्वास्थ्य एवं उद्योग नीति को अपनाया जाए एवं गो–उत्पादों (गोबर, गोमूत्र, जैविक खाद, पंचगव्य आदि) के उपयोग को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाए।
10. गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन को विद्यालय एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसका महत्व पढ़ाया जाए तथा गोवंश से संबंधित वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए, जिससे जैविक कृषि, औषधि निर्माण और पर्यावरण संतुलन में गोवंश का योगदान सुनिश्चित किया जा सके।
11. गोवंश संरक्षण के मामलों के शीघ्र निपटारे के लिए विशेष न्यायालय (फास्ट–ट्रैक कोर्ट) की स्थापना की जाए तथा इसके लिए विशेष अभियोजन पदाधिकारियों की नियुक्ति भी की जाए।

उपरोक्त प्रस्ताव भारतीय सँस्कृति, पर्यावरण और आर्थिक संरचना में गोवंश की महत्ता को पुनः स्थापित करने के लिए एक ठोस कदम है। हम केंद्र और राज्य सरकारों से आग्रह करते हैं कि इन बिंदुओं को प्राथमिकता के आधार पर लागू किया जाए, जिससे गोवंश की रक्षा और संवर्द्धन सुनिश्चित हो सके।

प्रस्तुतकर्ता : शशांक शेखर, अखिल भा. विधि प्रमुख
अनुमोदनकर्ता : लालबहादुर सिंह, नन्दिनी भोजराज

ब्राह्मण 20 लाख तो दलित लड़की का रेट 10 लाख, राजस्थान में अनपढ़ मुस्लिम लड़के यूं चला रहे धर्मांतरण का धंधा

22 फरवरी, 2025। राजस्थान के ब्यावर जिले के विजयनगर में नाबालिग लड़कियों को फंसाकर ब्लैकमेल, यौन शोषण और धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने के मामले ने प्रदेशभर में सनसनी फैला दी है। पूरा मामला प्रकाश में तब आया, जब एक पीड़िता परिजनों के साथ FIR दर्ज करवाने पुलिस थाने पहुँची, जिसके बाद पुलिस ने इस केस में आधा दर्जन लोगों की गिरफ्तारी की।

अजमेर–ब्यावर धर्म परिवर्तन

राजस्थान के ब्यावर जिले के विजयनगर में धर्म परिवर्तन के मामले में लगातार हैरान करने वाले खुलासे हो रहे हैं। इस मामले में 12–15 युवकों के एक गिरोह को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, जिन्होंने स्कूल की नाबालिग लड़कियों के साथ ब्लैकमेल, यौन शोषण और जबरन धर्म परिवर्तन कराने की साजिश रची। मामला तब खुला जब पीड़ित परिवारों ने इस संबंध में शिकायत दर्ज करवाई। इसके बाद पुलिस ने पाँच युवकों को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही दो नाबालिगों को हिरासत में लिया है। पुलिस ने POCSO एक्ट सहित कई धाराओं में मामला दर्ज किया है और आगे की जांच जारी है। उल्लेखनीय है कि इस पूरे मामले की 1992 के अजमेर ब्लैकमेल कांड से तुलना की जा रही है, जिसमें भी स्कूली नाबालिग लड़कियों को निशाना बनाया गया था।

पूरे मामले का खुलासा तब हुआ, जब एक पीड़िता परिवार के साथ एक नाबालिग युवती पुलिस थाने रिपोर्ट दर्ज करवाने पहुँची। युवती ने बताया कि उसके संपर्क में आया युवक सोहेल मंसूरी उसे मोबाइल फोन जैसे लुभावने तोहफे देकर फुसला रहा था। युवती ने बताया कि युवक एक दिन उसे एक कैफे में लेकर गया। पीड़िता का कहना है कि 'यहाँ पर मेरे साथ गलत हुआ। वहाँ पर सोहेल मंसूरी के दोस्त भी थे। उसने वहाँ पर मेरी फोटो निकाल ली और इसके बाद वह मुझे टॉर्चर करने की लगा कि मेरी अपनी फ्रेंड से बात करवा।

आरोप है कि युवक लड़की पर धर्म परिवर्तन का दबाव बना रहा था। साथ ही युवती की फोटो डिलीट करने की एवज में उसकी स्कूल की दूसरी लड़कियों से अपने दोस्तों को संपर्क में लाने का दबाब बना रहा था।

ब्राह्मण की लड़की 20 लाख, दलित और अन्य के 10 लाख....

पीड़िता ने आरोपी युवकों पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। युवती के अनुसार युवक के गिरोह में कई लड़के हैं, जो साजिश रच कर युवतियों को धर्मांतरण करने में जुटे थे। एक मीडिया चैनल से युवती ने कहा कि अपने जाल में फंसाने के लिए लड़के हर रोज नई–नई गाड़ियाँ लेकर आते थे। कभी कार, कभी बुलेट... अलग–अलग गाड़ियाँ होती थी।

छात्रा ने कहा, 'उन लोगों ने एक बार बोला था कि ब्राह्मण की छोरी को बेचेंगे, तो 20 लाख रुपये मिलेंगे और तुझे (दलित) बेचेंगे, तो 10 लाख रुपये मिलेंगे।' मीडिया रिपोटर्स के अनुसार गिरोह के सदस्य लड़कियों पर अपना धर्म अपनाने का दबाव भी बनाते थे। इन मुस्लिम युवकों की ओर से उन्हें धमकियाँ दी जाती थी, कलमा पढ़ें और रोजा रखें। अश्लील फोटो और वीडियो बनाकर उन्हें वायरल करने की धमकी भी दी जाती थी। युवती के खुलासे के बाद पुलिस पूरे मामले में लगातार तफ्तीश कर रही है।

पुलिस ने तीन FIR दर्ज की

पुलिस ने इस मामले में तीन FIR दर्ज की है। गिरफ्तार आरोपियों में रिहान मोहम्मद, सोहेल मंसूरी, लुकमान, अरमान पठान और साहिल कुरैशी शामिल हैं। बताया जा रहा है कि जिन लड़कों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, वो पढ़े–लिखे नहीं हैं। अनपढ़ लड़कों के इस गिरोह का काम मासूम बच्चियों को अपने जाल में फंसाना ही है। पुलिस अभी भी फरार आरोपियों की तलाश कर रही है। पीड़ित लड़कियों के बयान मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज कर लिए गए हैं। साथ ही मामले को POCSO कोर्ट में भेजा जाएगा। पुलिस का कहना है कि आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

(नवभारत टाईम्स से साभार)

'स्वर्गीय श्री कामेश्वर चौपाल जी को दी गई भावपूर्ण श्रद्धांजलि'

पटना। आज इस्कॉन मंदिर सभागार में विश्व हिंदू परिषद के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के न्यासी स्वर्गीय श्री कामेश्वर चौपाल जी की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पद्म श्री डॉ. आर.एन. सिंह ने की, मुख्य रूप से बिहार के पूर्व राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद, विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय न्यासी जीवेश्वर मिश्र, क्षेत्र संगठन मंत्री आनंद जी, दीघा विधायक डॉ. संजीव चौरसिया, पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. संजय पासवान, उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने श्री कामेश्वर चौपाल जी के योगदान को याद करते हुए उनके विचारों को आत्मसात करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

श्री जीवेश्वर मिश्र जी ने अपने संबोधन में कहा कि श्री कामेश्वर चौपाल जी समरसता के नायक थे, जिन्होंने सामाजिक समरसता और राष्ट्र निर्माण के लिए जीवन भर कार्य किया। वे राम मंदिर आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अग्रणी कार्यकर्ताओं में से एक थे। अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के शिलान्यास के दौरान उन्होंने प्रथम ईंट रखी थी, जिसके कारण उन्हें प्रथम कारसेवक का दर्जा प्राप्त हुआ। उन्होंने न केवल श्रीराम मंदिर के निर्माण हेतु संघर्ष किया, बल्कि माँ सीता जी के भव्य मंदिर के निर्माण हेतु भी संकल्पित थे।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित वक्ताओं ने श्री चौपाल जी के साथ के दिनों को याद कर अपने संस्मरणों को सांझा किया एवं उनके विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया और उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस श्रद्धांजलि सभा में बड़ी सँख्या में समाजसेवी, विद्वान, राजनीतिक एवं धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि तथा स्थानीय नागरिक उपस्थित थे। मंच का संचालन गौरव अग्रवाल ने किया।

chitranjan1964@gmail.com

सामाजिक समरसता अभियान द्वारा परावर्तन कार्यक्रम

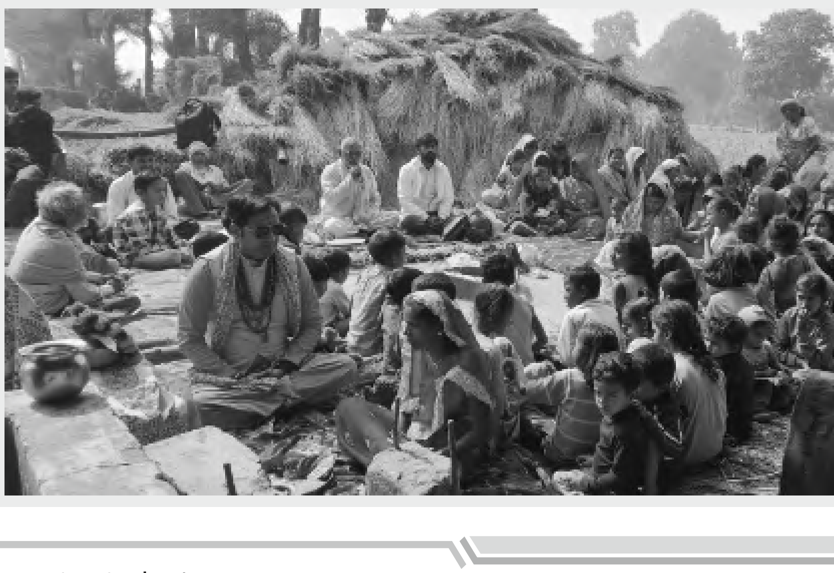

पटना। दुलहिन बाजार स्थित एनखा ग्राम में विश्व हिंदु परिषद सामाजिक समरसता विभाग द्वारा परावर्तन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें 24 परिवारों के 149 सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रान्त मंत्री सन्तोष सिसोदिया, प्रान्त उपाध्यक्ष डॉ. शोभारानी सिंह, प्रान्त सेवा प्रमुख सुग्रीव जी, प्रान्त सामाजिक समरसता सह प्रमुख सन्दीप जी, राहुल गौतम जी सहित विहिप सामाजिक समरसता अभियान के अनेक प्रमुख पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

chitranjan1964@gmail.com

समान नागरिक संहिता से समाज में सौहार्द्र बढ़ेगा : अजय कुमार

हरिद्वार, 17 फरवरी 2025। विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत कार्यालय सेठ मुरलीमल धर्मशाला अपर रोड, हरिद्वार में आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में उत्तराखण्ड राज्य में समान नागरिकता कानून के संबंध में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रांत संगठन मंत्री अजय कुमार ने कहा कि समान नागरिक संहिता से समाज में सौहार्द्र बढ़ेगा। इस कानून का उद्देश्य धर्म समुदायों पर आधारित असमान कानूनी प्रणालियों को समाप्त कर धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देना है। इससे विभिन्न धार्मिक प्रथाओं के आधार पर मौजूद असमानताओं और संघर्षों में कमी आएगी। इससे लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा। इस कानून से समाज में सामंजस्य और एकीकरण आएगा। यह कानून धर्म, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना लागू होगा। इस कानून का उद्देश्य सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर देना है। आज समय की महती आवश्यकता है कि संपूर्ण देश में भी समान नागरिकता कानून जल्दी ही लागू करना चाहिए।

अजय कुमार ने कहा कि हिंदू के नाते हम अपने धर्म का सम्मान करते हैं, लेकिन हमारे मन में अन्य धर्मों या आस्थाओं के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। एक समुदाय से संबंधित विवाह, तलाक, इद्दत और विरासत के संबंध में समान नागरिक संहिता 2024 के प्रावधानों को चुनौती दी गई है, जिसमें उन्होंने कहा कि यूसीसी भारत के संविधान के अनुच्छेद–25 का उल्लंघन करता है। यूसीसी की धारा–390 मुस्लिम समुदाय के सदस्यों के विवाह, तलाक, विरासत के संबंध में रीति–रिवाजों और प्रथाओं को निरस्त करती है। न्यायसंगत है कि नागरिक कानूनों में भी सुधार कर उनको एकीकृत किया जाना चाहिए। संप्रदाय विशेष के लोगों को भी अपनी गलतियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारने के लिए आगे आना चाहिए।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

रोहिंग्या/बाँग्लादेशी घुसपेठियों की जांच हेतु पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन

आज विश्व हिन्दू परिषद् एवं बजरंग दल झुन्झुनूं द्वारा प्रांत धर्मप्रसार प्रमुख सीएम भार्गव के सानिध्य एवं जिला मंत्री जयराज जांगिड़ की अध्यक्षता में अति. पुलिस अधीक्षक को पुलिस महानिदेशक जयपुर के नाम ज्ञापन दिया गया, जिसमें जिले के झुन्झुनूं, चिड़ावा, पिलानी शहर के विभिन्न क्षेत्रों की झुग्गी–झोपड़ियों व कच्ची बस्तियों में रहने वाले संदिग्ध लोगों की पहचान की मांग की गई। ज्ञापन में बताया गया है कि ऐसा ज्ञात हुआ है कि इनमें से अनेक रोहिंग्या/बाँग्लादेशी घुसपेठिये रह रहे हैं, इनके कारण जिले के विभिन्न जगहों पर चोरियाँ एवं आपराधिक घटनाएँ हो रही हैं। इनके पास विभिन्न राज्यों के भिन्न–भिन्न पहचान पत्र हैं। ऐसे लोग जिले की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। यह समस्या जिले में ही नहीं सम्पूर्ण

भारत में है। अन्य शहरों में इनकी पहचान कर इनको देश से निष्कासित किया गया है। विहिप ने जल्द से जल्द इनकी गहनता से जाँच कर उचित कार्यवाही करने की मांग की। अति. पुलिस अधीक्षक ने जल्द ही इन पर कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

bajrangdaljjn@gmail.com

वरिष्ठ नागरिक मंत्री ने रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर का दौरा किया

शुक्रवार, 14 फरवरी 2025 को रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर को माननीय केसी कोस्टेलो मंत्री की मेजबानी का सम्मान मिला। वरिष्ठ नागरिकों के लिए इस यात्रा ने इसे प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। यात्रा के दौरान, मंत्री कॉस्टेलो ने हिंदू विरासत के प्रमुख प्रतिनिधियों से मुलाकात की। केंद्र और संबद्ध संगठन बेहतर ढंग से समझते हैं कि केंद्र कैसे समावेशिता को बढ़ावा देता है और वरिष्ठ नागरिकों के लिए अनुरूप सहायता प्रदान करता है। मंत्री की चर्चा उन पहलों पर केंद्रित थी बुजुर्गों के कल्याण, सामाजिक जुड़ाव और साँस्कृतिक संवर्धन को बढ़ावा देना।

प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ निजी बैठक निम्नलिखित व्यक्तियों को अपने अनुभव सांझा करने के लिए मंत्री कॉस्टेलो से मिलने के लिए आमंत्रित किया गया था और हिंदू हेरिटेज सेंटर के साथ सहयोगात्मक प्रयास–

1. डॉ. जूलिया ऐनी – प्रबंधक, हिंदू हेरिटेज सेंटर (एचएचसी) ने इसका अवलोकन प्रदान किया।

2. डॉ. मार्गरीट थेरॉन – अध्यक्ष, रोटोरुआ बहुसाँस्कृतिक परिषद, और एचएचसी के समर्थक, रोटोरुआ एथनिक मार्केट, इंटरनेशनल कॉफी पेंटिंग जैसी पहलों के बारे में बात की। रोरी ओश्रूर्के और कैरन रोजर्स – एज कंसर्न के प्रतिनिधि, जो एचएचसी का उपयोग करते हैं। नृत्य कक्षाएँ, खाना पकाने की कक्षाएँ, और गेराज बिक्री।

4. नीलमणि राइट – रोटोरुआ में योग समुदाय के प्रतिनिधि ने हिंदू का वर्णन किया। हेरिटेज सेंटर एक स्वागत योग्य स्थान है, जो शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के कल्याण को बढ़ावा देता है।

5. ध्यान समूह की प्रतिनिधि सारा रॉबर्ट्स ने इसके महत्व पर प्रकाश डाला। एचएचसी का केंद्रीय स्थान, यह बताते हुए कि यह सभी दिशाओं से लोगों को आकर्षित करता है। यह वास्तव में महसूस होता है। हमारे स्थान की तरह उसने कहा।

6. डॉ. गुना मगेसन – हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन रोटोरुआ की ओर से बोलते हुए। अध्यक्ष और सचिव की अनुपस्थिति, एचएचसी को विकसित करने की सांझा योजना। बहुसाँस्कृतिक केंद्र जहाँ विविध जातीय समुदाय एक साथ आ सकते हैं।

7. रोटोरुआ फिजी इंडियन एसोसिएशन का प्रतिनिधित्व करने वाले अवनीश गौंडर ने कहा कि रामायण पाठ पहले अन्य स्थानों पर आयोजित किए जाते थे। एचएचसी में सामूहिक रूप से रामायण का पाठ करने के लिए विभिन्न समूहों को एकजुट करने की दिशा में समुदाय अब काम कर रहा है।

8. सुश्री वर्षा काकी – माननीय का स्वागत किया। एचएचसी की ओर से मंत्री. उसने उसे सांझा किया। केंद्र से व्यक्तिगत जुड़ाव, याद करते हुए कि उस क्षण से मुझे घर जैसा महसूस हुआ। वहाँ अपने पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न प्रमुख प्रतिनिधियों को सुनने के बाद मा. केसी कोस्टेलो, वरिष्ठ नागरिक मंत्री, हिंदू हेरिटेज सेंटर की समावेशी भावना के लिए अपनी सराहना व्यक्त की।

यह देखना वास्तव में खुशी की बात है कि कैसे विभिन्न समूह हिंदू

विरासत में एक साथ आ रहे हैं। केंद्र, एकता और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देना। मैंने इसी तरह का समुदाय–संचालित देखा है। अन्य शहरों में पहल, जहाँ साँस्कृतिक केंद्र सामाजिक संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, कल्याण को बढ़ावा देना, और विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवश्यक सेवाएँ प्रदान करना, यह प्रेरणादायक है। साँस्कृतिक और सामुदायिक पहल का जश्न मनाना। यात्रा की शुरुआत माननीय द्वारा पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। यह किसी कैबिनेट मंत्री की हिंदू विरासत केंद्र की तीसरी यात्रा है।

अपनी यात्रा के हिस्से के रूप में माननीय केसी कोस्टेलो को चांदी की पहली खेप प्राप्त करने का सम्मान प्राप्त हुआ। एल्डर्स सामुदायिक उद्यान से चुकंदर, केंद्र की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। स्थिरता और वरिष्ठ कल्याण। साँस्कृतिक समावेशिता और सामुदायिक जुड़ाव का केंद्र हिंदू हेरिटेज सेंटर साँस्कृतिक समृद्धि और समावेशिता के प्रतीक के रूप में खड़ा है, जो समर्पित है। युवाओं, महिलाओं और बुजुर्गों का समर्थन करना। जहाँ एक पोषणयुक्त वातावरण प्रदान करके व्यक्ति सीख सकते हैं, योगदान कर सकते हैं और संलग्न हो सकते हैं, केंद्र सामाजिकता को मजबूत करना जारी रखता है रोटोरुआ का कपड़ा।

न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष डॉ. गुना मैगेसन ने कहा, "माननीय को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मंत्री–भारतीय उच्चायुक्त और रोटोरुआ के मेयर हिंदू हेरिटेज सेंटर का दौरा करते हुए। जैसे–जैसे हम बढ़ते रहेंगे, हमें स्वागत की उम्मीद है और भी अधिक आगंतुक हमारी साँस्कृतिक और सामुदायिक पहल की समृद्धि का अनुभव करेंगे। हिंदू हेरिटेज सेंटर इसके संरक्षण, प्रचार और उत्सव के लिए प्रतिबद्ध है। जीवंत और समावेशी को बढ़ावा देते हुए हिंदू धर्म की विविध साँस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत रोटोरुआ में समुदाय।

hindu.nz@gmail.com

विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता द्वारा आयोजित समरसता रुद्राभिषेक में ६३ जोड़ों ने सहभागिता की

अशोकनगर। विश्व हिंदू परिषद समरसता विभाग द्वारा अशोकनगर में हजारेश्वर मंदिर महादेव भवन, गड़ी में सामाजिक समरसता रुद्राभिषेक किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने बताया कि हिंदू समाज हमेशा से समरस रहा है। अभी प्रयागराज के कुंभ में करोड़ों लोगों ने स्नान किया, कहीं जात–पात का भाव नहीं दिखा, ना किसी ने माना। राष्ट्र विरोधी तत्व धर्म विरोधी तत्व हमें जातियों में बांटकर, आपस में लड़ाकर हमको कमजोर करना चाहते हैं, इसलिए विश्व हिंदू परिषद समरसता द्वारा सभी समाजों के साथ बैठकर अशोकनगर की उन्नति, राष्ट्र की एकता और भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए समाज में समरसता के भाव से सभी समाज जनों ने मिलकर भगवान भोलेनाथ का रुद्राभिषेक किया। इस अवसर पर 37 समाजों के 63 जोड़े (पति–पत्नि) सहित उपस्थित रहे।

जाटव समाज, सिख समाज, सोनी समाज, यादव समाज, सेन समाज, ब्राह्मण समाज, श्रीवास्तव समाज, रघुवंशी समाज, माथुर समाज, नामदेव समाज, लोधी समाज, अग्रवाल समाज, डांगी समाज, चिडार समाज, पंजाबी समाज आदि के प्रमुख जोड़े सहित उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन समरसता प्रमुख विकास जैन बाली ने किया।

deepakmishravhp@gmail.com

विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल झुन्झुनूॅ की बैठक

आज विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल झुन्झुनूॅ की बैठक प्रजापति गेस्ट हाउस मोदी स्कूल के पास धर्मप्रसार प्रांत प्रमुख सी.एम. भार्गव के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुई एवं जिला मंत्री जयराज जांगिड़ की अध्यक्षता में की गई। जिसमें विहिप प्रांत बैठक जयपुर में जिले के लिए जयराज जांगिड़ को विहिप जिला मंत्री एवं सुशील प्रजापति को बजरंगदल जिला संयोजक के दायित्व पर मनोनीत करने पर स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। भार्गव ने नव नियुक्त दोनों पदाधिकारियों को भगवा अंगवस्त्र भेंट कर अपेक्षा जताई कि आप दोनों बंधु इन नवीन दायित्वों को पद नहीं जिम्मेदारी समझते हुए संगठन की रीति–नीति की पालना करते हुए सनातन संस्कृति संरक्षण एवं परिवर्धन के सतत कार्य करते रहेंगे। विहिप जिला सहमंत्री मनोज सैनी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

bajrangdaljjn@gmail.com

रोटोरुआ फिजी के हिंदू हेरिटेज सेंटर में भारतीय समुदाय भव्य महाशिवरात्रि उत्सव के लिए एकजुट हुआ

रोटोरुआ फिजी। भारतीय समुदाय भक्ति और साँस्कृतिक सद्भाव की भावना से बुधवार, 26 फरवरी 2025 को हिंदू हेरिटेज सेंटर में महा शिवरात्रि मनाने के लिए एक साथ आया। शाम को पवित्र अनुष्ठानों, आध्यात्मिक संगीत और एकता की मजबूत भावना, ड्राइंग द्वारा चिह्नित किया गया था, जिसमें 100 से अधिक भक्त और समुदाय के सदस्य सहभागी हुए।

हिंदू कैलेंडर में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक, महा शिवरात्रि को समर्पित है। भगवान शिव आध्यात्मिक जागृति, आत्म–अनुशासन और अच्छाई की विजय का प्रतीक हैं। यह पारंपरिक रूप से उपवास, ध्यान और प्रार्थनाओं के साथ मनाया जाता है, जो आंतरिकता को बढ़ावा देता है।

कार्यक्रम शाम 7.30 बजे वर्षा काकी के मार्गदर्शन में 15 मिनट के ध्यान सत्र के साथ शुरू हुआ। उपस्थित लोगों को एकता की स्थिति में लाना, इसके बाद भजन (भक्ति गीत), कीर्तन हुआ। (आध्यात्मिक जप) और पारंपरिक प्रार्थनाएँ, एक उत्थानशील और गहन आध्यात्मिक सृजन करती हैं।

आस्था और एकता का संगम – कार्यक्रम की सफलता के बारे में बोलते हुए प्रमुख आयोजकों में से एक अवनीश गौंडर ने कहा कि समुदाय को एक साथ आते देखकर प्रसन्नता होती है। "बहुत समय हो गया है, जब इतने सारे अलग–अलग समूह एक छत के नीचे एकजुट हुए हैं। हम हैं इस सपने को साकार करने के लिए हिंदू हेरिटेज सेंटर का वास्तव में आभारी हूँ।'' उत्सव ने योग और ध्यान शिक्षकों का भी स्वागत किया, जिससे आध्यात्मिकता और समृद्ध हुई। रात के सबसे हृदयस्पर्शी क्षणों में से एक वह था, जब महिलाएँ दक्षिण अफ्रीका, भारत और फिजी का प्रतिनिधित्व करने वाले श्रोताओं ने स्वेच्छा से भजन गाना शुरू कर दिया और मंच पर कीर्तन, जिसमें 7 वर्षीय तन्वी गौंडर भी शामिल हैं।

परंपरा और सामुदायिक भावना का उत्सव – समुदाय के प्रमुख नेताओं में से एक, नारायण रेड्डी ने त्योहार के गहरे अर्थ पर जोर दिया। "महाशिवरात्रि आध्यात्मिक चिंतन, आंतरिक शक्ति और सामुदायिक जुड़ाव का समय है। वह था इतने सारे लोगों को एक साथ आते देखना खुशी की बात है, इसके लिए युवा नेताओं के प्रयासों को धन्यवाद।''

यह आयोजन व्यापक समुदाय के लिए खुला था, जिसमें सभी पृष्ठभूमि के लोगों को हिंदू परंपराओं की समृद्धि और शिव चेतना का सार जानने तथा अनुभव के लिए आमंत्रित किया गया था। शाम को समापन पर उपस्थित लोगों को एक विशेष महाप्रसाद (सामुदायिक भोज) परोसा गया, रोटोरुआ में एक लोकप्रिय शाकाहारी रेस्तरां बैलवालजी ने प्रायोजित किया।

रोटोरुआ फिजी भारतीय समुदाय सभी प्रतिभागियों, स्वयंसेवकों और समर्थक, जिन्होंने महा शिवरात्रि 2025 उत्सव को यादगार और आध्यात्मिक रूप से बनाया, के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है

hindu.nz@gmail.com

मध्य भारत प्रांत भोपाल में व्यावसायियों के साथ आयोजित बैठक को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

कुशीनगर (उ.प्र.) में विहिप-गोरक्ष प्रांत की योजना बैठक को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी परांडे

अशोकनगर में विहिप सामाजिक समरसता द्वारा आयोजित समरसता रुद्राभिषेक में 63 जोड़ों ने सहभागिता की

रोटोरुआ फिजी के हिंदू हेरिटेज सेंटर में भारतीय समुदाय भव्य महाशिवरात्रि उत्सव के लिए एकजुट हुआ

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.03.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD
Proven Productivity

PRODUCT SOLUTIONS

Whether a suitable standard solution or a customized component - fastening technology must be matched with a specific customer need. At LPS Bossard we have a solution to your every fastening challenge.

APPLICATION ENGINEERING

Product designers and production engineers all face a maze of challenges when designing and building their products. Making the right choice of fastening solution speeds up assembly and reduces life cycle costs. The application engineers at LPS Bossard have the expertise to help make that critical decision.

SMART FACTORY LOGISTICS

Smart Factory Logistics is an end-to-end service for managing your B- and C-parts. It is a time-tested and proven methodology that helps to leverage hidden potential for productivity improvement.

Rajesh Jain
M.D., LPS Bossard Pvt. Ltd.
Trustee, Vishva Hindu Parishad

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road
Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
T +91 1262 305164-198
F +91 1262 305111,112
india@lpsboi.com
www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी